विनोबा के साथ सात दिन

—विभिन्न महत्वपूर्ण समस्याओं पर गंभीर विचार—

श्रीमन्नारायण

१९५७

सत्साहित्य प्रकाशन

प्रकाशक
मार्तण्ड उपाध्याय
मंत्री, सस्ता साहित्य मंडल,
नई दिल्ली

प्रकाशकीय

गाधी-विचार-धारा के चिंतको में प्रस्तुत पुस्तक के लेखक का अपना स्थान है। उन्होंने शिक्षा, अर्थशास्त्र आदि का विशेष रूप से अध्ययन किया है और कई पुस्तकों की रचना की है।

पिछले दिनो उन्हे विनोबाजी के साथ सात दिन रहने का सुयोग मिला था। उन दिनो में उन्होने आज की अनेक ज्वलत समस्याओ पर उनसे विचार-विनिमय किया। इस पुस्तक में उन्ही चर्चाओ को दिया गया है। भूदान, ग्रामदान, राज्यो का पुनर्गठन, बुनियादी शिक्षा, ग्रामोद्योग, नशाबदी, परिवार-नियोजन, जनतत्र और वर्तमान चुनाव-पद्धति आदि-आदि विषयो पर विनोबाजी के विचार बड़े ही सरल एव सुलझे हुए ढग से मिलते हैं। उनसे पाठको को एक नई दृष्टि प्राप्त होती है और सोचने के लिए काफी विचार-सामग्री।

हमें विश्वास है कि रचनात्मक कार्यकर्त्ताओ के लिए तो यह पुस्तक उपयोगी सिद्ध होगी ही, सामान्य पाठको को भी इससे लाभ होगा।

—मत्री

भूमिका

कुछ महीने पहले मैंने 'हिंदुस्तान टाइम्स' में आचार्य विनोबा भावे के भूदान तथा अन्य विषयों-संबंधी विचारों के बारे में एक लेखमाला लिखी थी। वह अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी की ओर से एक पुस्तिका के रूप में प्रकाशित हो चुकी है। 'सस्ता साहित्य मंडल' ने इस पुस्तिका का यह हिंदी-संस्करण प्रकाशित किया है और मैं आशा करता हूं कि यह पाठकों को रुचिकर होगा।

भूदान-आंदोलन आज संसार में एक विशिष्ट स्थान रखता है। भूमि-संबंधी जटिल आर्थिक समस्या को अहिंसा तथा प्रेम द्वारा किस प्रकार हल किया जा सकता है, यह आचार्य विनोबा भावे के भूदान-आंदोलन ने स्पष्ट-रूप से साबित कर दिया है। कुछ वर्ष पहले, कोई भी व्यक्ति यह विश्वास नहीं करता था कि जमीन बिना मुआवजे के दान दी जा सकती है, किंतु आज तो केवल जमीन ही नहीं, बल्कि गांव-के-गांव भूदान में दिये जा रहे हैं। ग्रामदान के इस आंदोलन से अधिक क्रांतिकारी और कौन-सी क्रांति हो सकती है? इस आंदोलन का महत्त्व अबतक बहुत कम लोग ठीक तौर पर समझ पाये हैं। अब तो विदेशों से भी काफी लोग भारत में आकर इस आंदोलन की गहराई को समझने की कोशिश कर रहे हैं।

मैं आशा करता हूं कि इस छोटी-सी पुस्तिका से आचार्य विनोबा भावे के क्रांतिकारी विचारों को समझने में कुछ मदद मिल सकेगी।

दिल्ली
मार्च, १९५७

—श्रीमन्नारायण

विषय-सूची

लेखक विनोबाजी के साथ
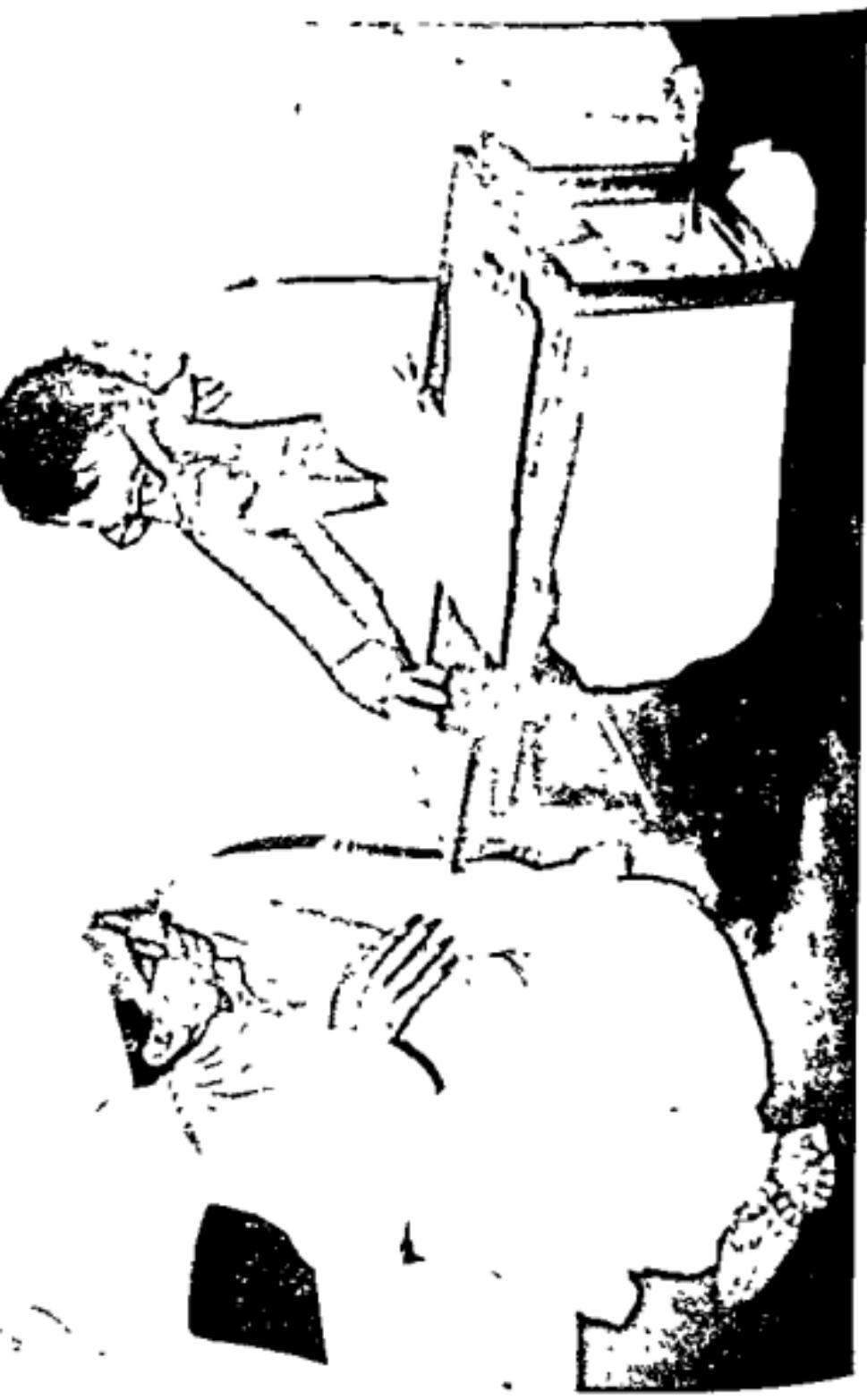
विनोबा के साथ सात दिन

: १ :

तेलंगाना में पुनः पदार्पण

आचार्य विनोबा को १८ अप्रैल सन् १९५१ को हैदराबाद से ३० मील दूर स्थित पोचमपल्ली नामक एक छोटे-से गांव में २०० एकड़ जमीन का पहला दान प्राप्त हुआ था। इस भूदान-आंदोलन के लिए उनके पास कोई पूर्वनिश्चित योजना नहीं थी। दरअसल, उन्हें इस दान का ख्याल भी नहीं था कि लोग सिर्फ मांगने पर अपनी जमीन दान देने के लिए राजी हो जायगे।

जब उन्होंने पोचमपल्ली गांव में प्रवेश किया तो वहां के हरिजनों ने जो कि वहां के निवासियों में सबसे गरीब थे उन्हें घेर लिया। उन्होंने विनोबाजी से प्रार्थना की कि वे उनके लिए थोड़ी-बहुत जमीन का इन्तजाम कर दें, जिसपर वे मेहनत करके अपनी रोटी कमा सकें। विनोबाजी को कोई उपाय नहीं सूझ रहा था। उनकी समझ में यह नहीं आ रहा था कि वे क्या करें। उन्होंने हरिजनों से कहा, "मेरे पास कोई जमीन नहीं है लेकिन मैं सरकार से इस मामले में छानबीन कराने की कोशिश करूंगा कि उनके लिए जमीन का इन्तजाम मुमकिन हो सकता या नहीं।"

विनोबाजी के दिमाग में एक विचार पैदा हुआ—'भारत ने शांति और अहिंसा के जरिए अपनी राजनीतिक आजादी हासिल की है। क्या उन्हीं के जरिए आर्थिक आजादी हासिल करने का रास्ता भी दुनिया को दिखा सकता है। जमीन का फिर से बंटवारा हमारी बुनियादी समस्याओं में से एक है। क्या यह मसला भी शांतिकारी ढंग पर सुलझाया जा सकता है? [illegible] गांव के लोगों से ही यह पूछ देखूं कि उनमें से कोई [illegible] हरिजनों के [illegible] जमीन दान दे सकता है या नहीं [illegible] कि उन्हें दूसरी [illegible] फिर

भी उन्होंने अपने चारों ओर एकत्र गांववालों से पूछा, "आपके गांव में हरिजनों को जमीन की जरूरत है, ताकि वे मेहनत और ईमानदारी से उस पर काम करके अपनी रोजी कमा सकें। क्या आप लोगों में कोई ऐसा नहीं है, जो उनकी जरूरतभर जमीन दान दे सके ?" वहां इकट्ठी भीड़ के आश्चर्य का ठिकाना न रहा, जब विनोबाजी के सवाल को सुनकर श्री रामचंद्र रेड्डी नामक एक सज्जन ने हाथ जोड़कर कहा, "मैं इन लोगों के लिए अपनी सौ एकड़ जमीन दान दे सकता हूं। कुछ वर्ष पहले मेरे पिताजी ने मेरेलिए दोसौ एकड़ जमीन छोड़ी थी। मैं उत्तराधिकारी के रूप में मिली इस दोसौ एकड़ जमीन का आधा योग्य और जरूरतमंद लोगों को देने की सोच रहा था। मैं तभीसे ऐसे मौके की तलाश में था, जब अपनी यह अभिलाषा पूरी कर सकूं। यह भगवान की बड़ी कृपा हुई कि आज वह सुनहरा मौका मिल गया है। कृपा करके मेरे इस दान को अस्वीकार न करें।" विनोबाजी भावाभिभूत हो उठे। उन्होंने इस छोटी-सी घटना के पीछे दैवी शक्ति के दर्शन किये। गांधीजी की अजर-अमर आत्मा भारत में जमीन के बटवारे की कठिन समस्या को हल करने का अहिंसक रास्ता दिखा रही थी।

स्वयं वहां के हरिजन भी श्री रामचंद्र रेड्डी की इस घोषणा के पूरे महत्व को नहीं समझ सके। यह घटना इतनी अच्छी थी कि इसके सही होने पर किसीको विश्वास ही नहीं हो रहा था। लेकिन विनोबाजी ने शांति के साथ उनसे पूछा, "आप लोगों को अपनी खेती-बाड़ी के लिए कितनी जमीन की जरूरत है ?" गांव में लगभग चालीस हरिजन-परिवार थे। उन ... के बड़े-बूढ़ों ने कुछ समय तक आपस में सलाह-मशविरा किया, ... विनोबाजी से कहा, "बाबा, हमारे लिए अस्सी एकड़ जमीन काफी ... हर परिवार अपनी खेती के लिए दो एकड़ लेगा। हमें इससे ज्यादा ...रत नहीं है।"

...रिजनों की यह बात सुनकर विनोबाजी एक बार फिर भावाभिभूत ...। निश्चय ही उन गरीब लोगों को यह बात मालूम थी कि

श्री रामचद्र रेड्डी ने दान में सौ एकड जमीन दी है। लेकिन वे अपनी जरूरत से ज्यादा नही लेना चाहते थे। उन्हें लालच नाममात्र को भी नही था। विनोबाजी ने उनसे पूछा, "क्या आप सौ एकड़ जमीन पर सहकारिता के आधार पर खेती करना स्वीकार करेंगे ?" उन्होंने बडी खुशी से उनकी बात मान ली। इस तरह विनोबाजी को उस दिन एक नई शक्ति मिली और उसी विनम्र स्थिति में ही महान् आशामय भूदान यज्ञ का उदय हुआ।

उसी दिन से विनोबाजी ने भूमि का दान मागना शुरू किया। वे जहां जाते, उनकी भूदान की माग शुरु हो जाती। जनता ने भी उनकी माग का उत्तर जिस आश्चर्यजनक ढग से दिया, वह सराहनीय है। तेलगाना के उस अशात वातावरण में भी, जबकि वह सारा क्षेत्र कम्युनिस्टो और सैनिको की कार्रवाइयो से त्रस्त था, विनोबाजी ने वहा से बारह हजार एकड जमीन इकट्ठी की। उस समय तेलगाना में फैली हुई अव्यवस्था और अशाति के सबध में भारत-सरकार बेहद चिंतित थी। कम्युनिस्ट लोगो को इस बात के लिए भडका रहे थे कि वे हिंसक तरीको द्वारा जमीन पर कब्जा कर लें। बहुत-से लोग कत्ल कर दिये गए। पुलिस और सेना कुछ इलाको में शाति स्थापित करने की कोशिश कर रही थी, लेकिन उसे सफलता नही मिल रही थी। इस तरह जनता चक्की के दो पाटो में पिस रही थी। रात में कम्युनिस्ट आकर उन्हे तग करते थे और दिन में कम्युनिस्टो की खोज में आये हुए पुलिस और सैनिक उन्हे बहुत ही परेशान करते थे। विनोबाजी के भूदान-आदोलन ने वहा की जनता को आशा की नई रोशनी दिखलाई। वे घृणा और हिंसा के स्थान पर प्रेम और पारस्परिक सहायता के महत्व को महसूस करने लगे। दूसरो को जबर्दस्ती तग करके और बल-प्रयोग द्वारा उनकी जायदाद हड़प लेने की बजाय, उन्होंने खुद अपनी आखों से नैतिक और आध्यात्मिक शक्ति के जरिए हृदय-परिवर्तन के प्रेरणामय दृश्य देखे। इस प्रकार, तेलगाना में अपने महान् और सतोषमय भूदान-आदोलन के जरिए विनोबाजी ने वह कर दिखलाया, जिसे पुलिस और सैनिक करने में असमर्थ रहे। स्वय प्रधान मत्री श्री नेहरू

ने सगर में घोषणा की थी—"यह दुबला-पतला कमजोर आदमी देश-
भाग व बंगाल और पाकिस्तान इलाके में शांति कायम करने में बड़ा
मददगार साबित हुआ है।" वर्तमान पाकिस्तान से छूटकर विनोबाजी
उसी समय से भूमिहीनों के लिए जमीन हासिल करने के उद्देश्य से सात-
सात से पैदल भूदान यात्रा कर रहे हैं। अबतक वे मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश
बिहार, बंगाल, उड़ीसा और आंध्र के इलाकों में १५,००० मील की पद-
यात्रा कर चुके हैं। ८ वर्ष बाद, सितंबर सन् १९५५ के अंत में, उन्होंने
फिर तेलंगाना में प्रवेश किया। वे ३० जनवरी सन् १९५६ को,
जोकि महात्मा गांधी की वर्षी पुण्यतिथि थी, पोचमपल्ली पहुंचे। उस
तारीख तक उन्हें भूदान में ४० लाख एकड़ जमीन मिल चुकी थी। उन
में कुछ ऐसे भी गांव शामिल थे, जो पूरे-के-पूरे दान में मिले थे।
लेकिन इतनी सफलता पर भी विनोबाजी बहुत खुश नहीं थे। शाम
प्रार्थना-सभा में उन्होंने आत्म-निरीक्षण पर खास जोर दिया। वे राज्यों
के पुनर्गठन के सबंध में देश के भिन्न-भिन्न हिस्सों में हुई अशांति
के कारण बहुत ही चिंतित और क्षुब्ध थे। उन्होंने सभा में घोषणा की
कि भूदान अपने मकसद को हासिल करने में असफल रहा है। उस
बुनियादी लक्ष्य सिर्फ भूमिहीन मजदूरों के लिए जमीन इकट्ठा करना ही न
है, बल्कि इस बात में एक नया विश्वास पैदा करना भी है कि कठि
से-कठिन मसलों को भी हल करने में अहिंसा एक जबर्दस्त हथियार साबि
हो सकती है। बिहार और उड़ीसा-जैसे राज्यों में भी, जहां विनोबा
को लाखों एकड़ जमीन मिल चुकी है, हिंसा और अशांति की घट
हुई हैं। इन घटनाओं से विनोबाजी का हृदय बेहद दुखी है। उन्हों
पोचमपल्ली की सभा में एकत्र हुए लोगों से कहा कि अगर लोग भू
असली महत्व और मकसद को नहीं समझेंगे तो हमारी राजनैति
आजादी भी खतरे में पड़ कर रहेगी।

थोड़े ही दिनों के बाद विनोबाजी ने राज्यों के पुनर्गठन
ध में हुए झगड़े-फिसादों और अशांतियों के बारे में अपनी मान

भी अच्छा ज्ञान है। उन्होंने संस्कृत और अरबी भाषा पर भी अच्छा अधिकार हासिल किया है। बहुत-सी भाषाएं सीख लेने की अपनी इस प्रतिभा की सफाई में उनका कहना है कि उन्हें खुद अपनी मातृभाषा मराठी का साधिकार ज्ञान प्राप्त करने का अच्छा मौका मिल गया था। उनका विश्वास है कि अगर कोई व्यक्ति एक भाषा अच्छी तरह सीख ले और उसके व्याकरण तथा शब्द-विन्यास की योग्यता हासिल करले, तो उसके लिए दूसरी भाषाओं का भी कामचलाऊ ज्ञान प्राप्त कर लेना मुश्किल नहीं है।

विनोबाजी लापरवाही से या उडती नजर की पढाई में विश्वास नहीं करते। वे जिस किताब को उठाते हैं, उसे खूब अच्छी तरह और श्रद्धा के साथ पढते हैं। दरअसल, उन्होंने गीता, उपनिषद्, रामायण और कुरान का बहुत ही गहरा अध्ययन किया है। सचमुच, वे दुनिया के सभी धर्मों के पूर्ण ज्ञाता हैं। करीब-करीब तीस साल पहले जेल में अपने साथियों के बीच उन्होंने जो 'गीता-प्रवचन' दिये थे, वे इसी नाम से भारत की कई भाषाओं में पुस्तकाकार प्रकाशित हो चुके हैं और अबतक उसकी कई लाख प्रतियां प्रार्थना-सभा के बाद बिक चुकी हैं। विनोबाजी अपनी इस पुस्तक को इतना अधिक महत्व देते हैं कि वे रोजाना शाम को बिकी हुई प्रतियों पर अपना हस्ताक्षर करना स्वीकार कर लेते हैं। उनका विचार है कि गीता का पूरा-पूरा अध्ययन कर लेने से अपने व्यक्तित्व के सभी पहलुओं के विकास में बडी मदद मिल सकती है। पिछले चार-पांच वर्षों से वे लोगों को जिस ढंग पर भूदान-आन्दोलन का आशय समझाते आ रहे हैं, वह अद्भुत है। उनका प्रार्थना के बाद का भाषण रोजाना नए विचारों, दृष्टान्तों और दृष्टिकोण से भरा होता है। विनोबाजी भूदान के सम्बन्ध में अपने विचार स्पष्ट करते समय सभी तरह के सम्भव विषयों पर रोशनी डालते हैं। वे जन्मजात शिक्षक हैं। बच्चों को पढाते समय या अपने दर्शकों कोई नया दृष्टिकोण समझाते समय वे जितने प्रसन्न और अपने स्वाभा- होते हैं, उतने और कभी नहीं होते।

विनोबाजी बड़े तड़के २॥ बजे रात को ही गोकर उठ जाते हैं। दैनिक क्रिया से निवृत्त होकर वे सूत कातने बैठ जाते हैं। सूत कातते समय ही वे दिन का अधिकांश मनन-चिन्तन भी कर डालते हैं। उनके दल के लोग ३॥ बजे रात में प्रार्थना करने बैठ जाते हैं, जो करीब-करीब आधे घण्टे तक चलती है। प्रार्थना हो जाने पर पद-यात्रा का आयोजन करनेवाला व्यक्ति उठकर खड़ा हो जाता है। वह अगले पड़ाव की घोषणा करता है, अन्दाज से उसकी दूरी बतलाता है। पाच का घण्टा बजते ही विनोबाजी अपने अस्थायी शिविर की झोपड़ी से निकल पड़ते हैं और प्रात -कालीन पदयात्रा शुरू कर देते हैं। एक व्यक्ति उनसे ५० गज आगे-आगे लालटेन लेकर चलता है और रास्ता दिखलाता है। कई क्षण तक विनोबाजी प्राचीन धर्म-ग्रन्थों से सस्कृत के श्लोकों का पाठ करते हैं और फिर बातचीत या चर्चा के लिए तैयार हो जाते हैं। इन दिनों वे आमतौर पर ३ घण्टे में लगभग ८ मील पैदल चलते हैं। रास्ते में ६॥ बजेके लग-भग वे १५ मिनट के लिए रुककर दही का जलपान करते हैं। याद रहे, विनोबाजी कई वर्षों से अलसर के मरीज रहे हैं और ज्यादातर भोजन में दही ही लेते हैं। कभी-कभी दही में मधु भी मिला लेते हैं। सम्भव होने पर वे रोजाना एक उबाला हुआ सेब लेते हैं और उसपर थोड़ा-सा मक्खन भी।

प्रात कालीन पद-यात्राओं के दौरान में मैंने उनसे मुख्तलिफ विषयों पर बातें की। इन विषयों में दूसरी पचवर्षीय योजना, भूदान और भूमि-सुधार, बुनियादी शिक्षा, परिवार-नियोजन, ग्रामोद्योग और अम्बर-चर्खा, जातिभेद और साम्प्रदायिकता तथा राज्यों का पुनर्गठन भी शामिल थे। हमने दूसरे बहुत-से विषयों, जैसे प्रकाशन-सर्वाधिकार के औचित्य छोटी बचत आन्दोलन को बढ़ावा देने के तरीकों, कांग्रेस-जनों के प्रशिक्षण के लिए पाठ्यक्रम, पुलिस के लिए खास तौर पर गोली चलाने के बारे में नियम तथा सरकारी नौकरियों में भर्ती होने के लिए परीक्षा पर भी चर्चा की। विनोबाजी बाएं कान से कम सुनते हैं, अतः सदा उनके दाहिने

प्रार्थना के बाद विनोबाजी रोज प्रवचन करते हैं। वे प्रायः समस्याओं पर काफी विद्वत्तापूर्ण वार्ताओं-जैसे होते हैं, हालांकि उनकी भाषा बड़ी स्पष्ट होती है, जिसे ग्राम जनता बड़ी आसानी से समझ सकती है। इस तरह के जनता के सामने जो भी प्रवचन करते हैं, उनपर उनके मौलिक चिन्तन की छाप होती है। किन्तु बनी-बनाई रूढ़ियों और अन्ध-विश्वासों का आदर नहीं होता। सभी मसलों पर उनके विचार और सुझाव बड़े ही सर्वांगपूर्ण होते हैं, हालांकि ऊपरी सतह के नीचे देखने पर विनोबाजी बहुत ही भावुक और अनुभूति-प्रधान व्यक्ति मिलेंगे। अपने गुरु महात्मा गांधी की चर्चा करते समय विनोबाजी अक्सर भावनाओं के प्रवाह में इतना बह जाते हैं कि उनका गला रुंध-सा जाता है और उनके लिए कुछ कह पाना मुश्किल हो जाता है। ऐसे मौकों पर वे कई क्षण तक मौन हो जाते हैं और उनकी आंखों से आंसू उमड़कर बहने लगते हैं। विनोबाजी के हृदय में गांधीजी के महान् शिष्य नेहरूजी के लिए भी गहरा स्नेह और सम्मान है। वे अपने प्रवचनों और वार्ताओं के सिलसिले में अक्सर उनका हवाला देते रहते हैं। हालांकि आर्थिक मामलों में विनोबाजी कभी-कभी नेहरूजी की बड़ी आलोचना करते हैं, लेकिन फिर भी नेहरूजी की विमल और पारदर्शी सच्चाई तथा सत्य और अनुसन्धान-सम्बन्धी प्रेरणा के प्रति उनके हृदय में गहरी श्रद्धा है, इसमें सन्देह नहीं कि नेहरूजी और विनोबाजी उस महान गुरु के दो सबसे महान् शिष्य हैं, जो परस्पर एक-दूसरे की कमी को पूरा करते हैं। नेहरूजी ने पंचशील की दिशा में अन्तर्राष्ट्रीय सद्भावना और सहयोग का शानदार मार्ग प्रदर्शित किया है, विनोबाजी ने जमीन के बटवारे-जैसे बहुत ही मुश्किल आर्थिक सवालों को

सुलझाने के लिए अहिंसा और सर्वोदय का मार्ग प्रशस्त किया है।

तेलगाना में विनोबाजी के साथ मैं एक सप्ताह तक रहा। उस दरम्यान विनोबाजी ने अपने प्रार्थना-प्रवचनों में गांववालो को बतलाया कि उन्हें स्वशासन की बुनियादी इकाइयों के रूप में अपनी स्थानीय संस्थाओं को किस तरह विकसित करना चाहिए। उन्होंने गाववालो को इस बात की याद दिलाई कि वे स्वराज्य मिल जाने के बाद, अब खुद ही अपने देश के असली मालिक है और मत्री, ससद और विधान-सभाओ के सदस्य सही माने में उनके सेवक है। अतः उन्हें अपनी भलाई की बात खुद ही सोचनी चाहिए और उसीके मुताबिक अपने प्रतिनिधियों को निर्देश भी करना चाहिए। विनोबाजी ने जनता का ध्यान इस बात की ओर भी खीचा कि भूदान केवल जमीन का भौतिक पुन.वितरण ही नही है, बल्कि जीवन की नई मान्यताओ का सृजन भी है। लोभ, शोषण और अधिकार-भावना की जगह भूदान-यज्ञ ग्राम जनता को पारस्परिक सहायता, सहयोग और आत्म-समर्पण का मूल्य सिखा रहा है। अब विनोबाजी लोगों द्वारा अपनी जमीन या सम्पत्ति के छठे हिस्से के दान से ही सन्तुष्ट नही। वह चाहते है कि लोग अपना सबकुछ समाज को समर्पित करदें और फिर कृतज्ञता के साथ समाज द्वारा अपनी निम्नतम भौतिक जरूरतों के लिए दिया गया जो कुछ भी हो, उसे स्वीकार करें। विनोबाजी अब 'दान' के स्थान पर 'समर्पण' शब्द का प्रयोग करते है।

जिस समय विनोबाजी गाव में से होकर पैदल चलते है, उस समय लोग सड़क के दोनों किनारो पर बड़ी शिष्टता के साथ खड़े होकर गीत और गाने गाते है तथा वेद-मत्रों का पाठ करते हैं। विनोबाजी यह पसन्द नही करते कि लोग उनका चरण छुए, न वे यह चाहते हैं कि लोग उनके गले में माला डालने में उनका या अपना समय फिजूल नष्ट करें। [illegible] चाहते है कि वे उनके हाथ में ही फूल या माला दे दें। कभी-[illegible]र लोगों से अपने ही गले में माला डाल लेने के लिए कह देते [illegible]से बढ़ जाते हैं। कुछ समय तक गावों की भजन और

गुलभाने के लिए अहिंसा और सर्वोदय का मार्ग प्रशस्त किया है।

तेलगाना में विनोबाजी के साथ मैं एक सप्ताह तक रहा। उस दः
ध्यान विनोबाजी ने अपने प्रार्थना-प्रवचनों में गांववालों को बतलाया कि
उन्हें स्वशासन की बुनियादी इकाइयों के रूप में अपनी स्थानीय संस्थाओं
को किस तरह विकसित करना चाहिए। उन्होंने गांववालों को इस बात
की याद दिलाई कि वे स्वराज्य मिल जाने के बाद अब खुद ही अपने
देश के असली मालिक हैं और मंत्री, संसद और विधान-सभाओं के सदस्य
सही माने में उनके सेवक हैं। अतः उन्हें अपनी भलाई की बात खुद ही
सोचनी चाहिए और उसीके मुताबिक अपने प्रतिनिधियों को निर्देश भी
करना चाहिए। विनोबाजी ने जनता का ध्यान इस बात की ओर भी
खींचा कि भूदान केवल जमीन का भौतिक पुन वितरण ही नहीं है, बल्कि
जीवन की नई मान्यताओं का सृजन भी है। लोभ, शोषण और अधिकार
भावना की जगह भूदान-यज्ञ आम जनता को पारस्परिक सहायता, सहयोग और आत्म-समर्पण का मूल्य सिखा रहा है। अब विनोबाजी लोगों
द्वारा अपनी जमीन या सम्पत्ति के छठे हिस्से के दान से ही सन्तुष्ट नहीं।
वह चाहते हैं कि लोग अपना सबकुछ समाज को समर्पित कर दें और फिर
कृतज्ञता के साथ समाज द्वारा अपनी निम्नतम भौतिक जरूरतों के लिए
दिया गया जो कुछ भी हो, उसे स्वीकार करें। विनोबाजी अब 'दान' के
स्थान पर 'समर्पण' शब्द का प्रयोग करते हैं।

जिस समय विनोबाजी गाव में से होकर पैदल चलते हैं, उस समय
लोग सड़क के दोनो किनारो पर बड़ी शिष्टता के साथ खड़े होकर गीत
और गाने गाते हैं तथा वेद-मंत्रो का पाठ करते हैं। विनोबाजी
नही करते कि लोग उनका चरण छुए, न वे यह चाहते
उनके गले में माला डालने में उनका या अपना समय
वे लोगो से कहते हैं कि वे उनके हाथ में ही फूल या
कभी वे हँसकर लोगो से अपने ही गले में माला
हैं और फिर आगे बढ जाते हैं। कुछ समय

छोड़ देने के लिए तैयार हो जाते हैं और सच्चे प्रेम तथा संतोष के साथ अपने परिवार के आकार के आधार पर अपनी जरूरतों के हिसाब कुछ थोड़ी-सी जमीन ही लेना स्वीकार कर लेते हैं।

कोरापुट के ग्रामदानवाले एक गांव में एक व्यक्ति को, जिसके पास पहले २४ एकड़ जमीन थी, जमीन के पुनर्वितरण के समय केवल ३॥ एकड़ जमीन मिली, जबकि एक दूसरे व्यक्ति को, जिसके पास कुछ भी जमीन नहीं थी, पांच एकड़ जमीन प्राप्त हुई, क्योंकि उसके परिवार में सदस्यों की संख्या अधिक थी। सबसे सुंदर और सराहनीय बात यह थी कि २४ एकड़ जमीन का वह मालिक बहुत ही कृतज्ञता के साथ विनोबा-जी के हाथों से ३॥ एकड़ जमीन स्वीकार करता है। उस समय उसकी भावना प्रार्थी और भक्त-जैसी थी।

विनोबाजी के साथ तेलंगाना में यात्रा करते समय श्री अण्णासाहब सहस्रबुद्धे, जिनके ऊपर कोरापुट की गहन योजना कार्यान्वित करने का भार है, ग्रामदानवाले गांवों के विकास के संबंध में बहुत-से मसलों पर वार्त्ता के लिए आये थे। वर्तमान योजना के अनुसार, ग्रामदानवाली जमीन, गांववालों के बीच उनके परिवारों के आकार के अनुसार, और आम तौर पर परिवार के प्रत्येक सदस्य के लिए एक एकड़ जमीन के हिसाब से, बांटी जाती है। हां, भिन्न-भिन्न गांवों की परिस्थितियां भिन्न-भिन्न होने की वजह से कुछ हदतक उनमें रद्दोबदल हो सकती है। ये परिवार जबतक ग्राम-पंचायत या ग्रामसभा को अपनी जमीन का लगान अदा करते रहेंगे तबतक उन्हें उस जमीन पर खेती-बाड़ी करने की इजाजत रहेगी, और उनके बाद उनकी अगली पीढ़ी भी उसे जोत-बो सकेगी। यदि किसी परिवार की जमीन जोती-बोई न जाय और बंजर पड़ी रहे तो वह फिर ग्राम-पंचायत को वापस हो जाती है। जो जमीन लोगों में बांटी जाती है, वह बेची या हस्तांतरित नहीं की जा सकती है। इस तरह की कोई व्यवस्था केवल ग्रामसभा की अनुमति से ही हो सकती है। ग्रामदान-वाले गांव में भूदान का १०वां हिस्सा सहकारिता के आधार

छोड़ देने के लिए तैयार हो जाते हैं और सच्चे प्रेम तथा संतोष के साथ अपने परिवार के आकार के आधार पर अपनी जरूरतों के हिसाब कुछ थोड़ी-सी जमीन ही लेना स्वीकार कर लेते हैं।

कोरापुट के ग्रामदानवाले एक गाव में एक व्यक्ति को, जिसके पास पहले २४ एकड़ जमीन थी, जमीन के पुनर्वितरण के समय केवल ३॥ एकड़ जमीन मिली, जबकि एक दूसरे व्यक्ति को, जिसके पास कुछ भी जमीन नहीं थी, पाच एकड़ जमीन प्राप्त हुई, क्योंकि उसके परिवार में सदस्यों की संख्या अधिक थी। सबसे सुंदर और सराहनीय बात यह थी कि २४ एकड़ जमीन का वह मालिक बहुत ही कृतज्ञता के साथ विनोबा-जी के हाथों से ३॥ एकड़ जमीन स्वीकार करता है। उस समय उसकी भावना आर्यों और भक्त-जैसी थी।

विनोबाजी के साथ तेलगाना में यात्रा करते समय श्री अण्णासाहब सहस्रबुद्धे, जिनके ऊपर कोरापुट की सघन योजना कार्यान्वित करने का भार है, ग्रामदानवाले गावों के विकास के संबंध में बहुत-से मसलों पर वार्त्ता के लिए आये थे। वर्तमान योजना के अनुसार, ग्रामदानवाली जमीन, गाववालों के बीच उनके परिवारों के आकार के अनुसार, और आम तौर पर परिवार के प्रत्येक सदस्य के लिए एक एकड़ जमीन के हिसाब से, बाटी जाती है। हा, भिन्न-भिन्न गावों की परिस्थितिया भिन्न-भिन्न होने की वजह से कुछ हदतक उनमें रद्दोबदल हो सकती है। ये परिवार जबतक ग्राम-पचायत या ग्रामसभा को अपनी जमीन का लगान अदा करते रहेंगे तबतक उन्हें उस जमीन पर खेती-बाड़ी करने की इजाजत रहेगी, और उनके बाद उनकी अगली पीढ़ी भी उसे जोत-बो सकेगी। यदि किसी परिवार की जमीन जोती-बोई न जाय और बंजर पड़ी रहे तो वह फिर ग्राम-पचायत को वापस हो जाती है। जो जमीन लोगों में बाटी जाती है, वह बेची या हस्तातरित नहीं की जा सकती है। इस तरह की कोई व्यवस्था केवल ग्रामसभा की अनुमति से ही हो सकती है। ग्रामदान-वाले गाव में भूदान का १०वा हिस्सा सहकारिता के आधार

: ३ :

ग्रामदान : महान् क्रांति

भूदान-ग्रादोलन के प्रारभ में विनोबाजी ने लोगों से गाव के भूमि-हीन मजदूरों के लिए ग्रपनी जमीन का छठा हिस्सा दान करने की ही माग की थी। विनोबाजी ने गाववालो से कहा, "यदि ग्रापके पाच लडके हैं, तो छठा मुझे समझिए ।" लेकिन उत्तर प्रदेश ग्रौर बिहार के कुछ गाव-वालों ने ग्रपनी छोटी-बडी सारी जमीन गाव-वालो में फिर से बाटने के लिए दान में देना स्वीकार कर लिया ।

भूदान-ग्रादोलन के इस नए स्वरूप ने, जिसे 'ग्रामदान' कहते हैं, उडीसा में, ग्रौर खास तौर पर कोरापुट जिले में, बहुत जोर पकडा। वहा पर नौसौ से ग्रधिक गाव विनोबाजी को दान में दिये जा चुके हैं। दर-ग्रसल, ग्रामदान-ग्रादोलन दुनिया के इतिहास में हुई सबसे बड़ी क्रातियो में विशेष स्थान रखता है। स्वय विनोबाजी इसे एक महान् 'सीमा-चिन्ह' ग्रौर भूदान-यज्ञ की दिशा में होनेवाले ग्रभियान का 'ग्रतिम ग्रचल' मानते हैं। जरा कल्पना तो कीजिए कि ग्रात्मत्याग ग्रौर पार-स्परिक सहयोग की भावना से गावो के सभी किसान सारी जमीन दान में दे देते हैं, ग्रौर फिर, ग्रपने परिवार की जरूरतो के मुताबिक कुछ टुकडे वापस लेते हैं।

क्या मनुष्य के मस्तिष्क ग्रौर हृदय के इस महान् ग्रौर ग्रद्भुत परि-वर्त्तन से बढ़कर भी कोई दूसरी क्राति हो सकती है? ग्राम तौर पर लोगो में जमीन का बहुत मोह होता है, ग्रौर वे जमीन-सबधी ग्रपने [illegible] हितो को सुरक्षित रखने के लिए ग्रदालत में ग्रपनी [illegible] तक

छोड देने के लिए तैयार हो जाते हैं और सच्चे प्रेम तथा सतोष के साथ अपने परिवार के आकार के आधार पर अपनी जरूरतों के हिसाब कुछ थोडी-सी जमीन ही लेना स्वीकार कर लेते हैं।

कोरापुट के ग्रामदानवाले एक गाव में एक व्यक्ति को, जिसके पास पहले २४ एकड जमीन थी, जमीन के पुनर्वितरण के समय केवल ३॥ एकड जमीन मिली, जबकि एक दूसरे व्यक्ति को, जिसके पास कुछ भी जमीन नही थी, पाच एकड जमीन प्राप्त हुई, क्योंकि उसके परिवार में सदस्यो की सख्या अधिक थी। सबसे सुदर और सराहनीय बात यह थी कि २४ एकड जमीन का वह मालिक बहुत ही कृतज्ञता के साथ विनोबा-जी के हाथो से ३॥ एकड जमीन स्वीकार करता है। उस समय उसकी भावना प्रार्थी और भक्त-जैसी थी।

विनोबाजी के साथ तेलगाना में यात्रा करते समय श्री अण्णासाहब सहस्रबुद्धे, जिनके ऊपर कोरापुट की गहन योजना कार्यान्वित करने का भार है, ग्रामदानवाले गावों के विकास के सबध में बहुत-से मसलों पर वार्त्ता के लिए आये थे। वर्तमान योजना के अनुसार, ग्रामदानवाली जमीन, गाववालो के बीच उनके परिवारो के आकार के अनुसार, और आम तौर पर परिवार के प्रत्येक सदस्य के लिए एक एकड जमीन के हिसाब से, बाटी जाती है। हा, भिन्न-भिन्न गावो की परिस्थितिया भिन्न-भिन्न होने की वजह से कुछ हदतक उनमें रद्दोबदल हो सकती है। ये परिवार जबतक ग्राम-पचायत या ग्रामसभा को अपनी जमीन का लगान अदा करते रहेंगे तबतक उन्हें उस जमीन पर खेती-बाडी करने की इजाजत रहेगी, और उनके बाद उनकी अगली पीढी भी उसे जोत-बो सकेगी। यदि किसी परिवार की जमीन जोती-बोई न जाय और बंजर पडी रहे तो वह फिर ग्राम-पचायत को वापस हो जाती है। जो जमीन लोगों में बाटी जाती है, वह बेची या हस्तातरित नहीं की जा सकती है। इस तरह की कोई व्यवस्था केवल ग्रामसभा की अनुमति से ही हो सकती है। ग्रामदान-वाले गाव में भूदान का १०वा हिस्सा सहकारिता के आधार

: ३ :

ग्रामदान : महान् क्रांति

भूदान-ग्रादोलन के प्रारभ में विनोबाजी ने लोगों से गाव के भूमिहीन मजदूरो के लिए अपनी जमीन का छठा हिस्सा दान करने की ही माग की थी। विनोबाजी ने गाववालो से कहा, "यदि आपके पाच लड़के हैं तो छठा मुझे समझिए।" लेकिन उत्तर प्रदेश और बिहार के कुछ गाववालों ने अपनी छोटी-बडी सारी जमीन गाव-वालो में फिर से बाटने के लिए दान में देना स्वीकार कर लिया।

भूदान-ग्रादोलन के इस नए स्वरूप ने, जिसे 'ग्रामदान' कहते हैं, उडीसा में, और खास तौर पर कोरापुट जिले में, बहुत जोर पकडा। वहा पर नौसौ से अधिक गाव विनोबाजी को दान में दिये जा चुके हैं। दर असल, ग्रामदान-ग्रादोलन दुनिया के इतिहास में हुई सबसे बडी क्रांतियों में विशेष स्थान रखता है। स्वय विनोबाजी इसे एक महान् 'नैतिक चिन्ह' और भूदान-यज्ञ की दिशा में होनेवाले अभियान का 'अंतिम अंचल' मानते हैं। जरा कल्पना तो कीजिए कि आत्मत्याग और पारस्परिक सहयोग की भावना से गावों के सभी किसान सारी जमीन दान में दे देते हैं, और फिर, अपने परिवार की जरूरतो के मुताबिक कुछ टुकडे वापस लेते हैं।

क्या मनुष्य के मस्तिष्क और हृदय के इस महान् और अद्भुत परिवर्तन से बढकर भी कोई दूसरी क्राति हो सकती है? ग्राम तौर पर लोगो में जमीन का बहुत मोह होता है, और वे जमीन-सबधी अपने सभी हितो को सुरक्षित रखने के लिए अदालत में अपनी सारी सपत्ति तक खर्च कर देने में नही हिचकते। लेकिन एक महात्मा द्वारा -
वनाओ को प्रेरित करके अनुरोध करने से ही वे ·

छोड़ देने के लिए तैयार हो जाते हैं और सच्चे प्रेम तथा मनोयोग के साथ अपने परिवार के आकार के आधार पर अपनी जरूरतों के हिसाब कुछ थोड़ी-सी जमीन ही लेना स्वीकार कर लेते हैं।

कोरापुट के ग्रामदानवाले एक गांव में एक व्यक्ति को, जिसके पास पहले २४ एकड़ जमीन थी जमीन के पुर्नवितरण के समय केवल ३॥ एकड़ जमीन मिली, जबकि एक दूसरे व्यक्ति को, जिसके पास कुछ भी जमीन नहीं थी, पांच एकड़ जमीन प्राप्त हुई, क्योंकि उसके परिवार में सदस्यों की संख्या अधिक थी। सबसे सुंदर और सराहनीय बात यह थी कि २४ एकड़ जमीन का वह मालिक बहुत ही कृतज्ञता के साथ विनोबा-जी के हाथों से ३॥ एकड़ जमीन स्वीकार करता है। उस समय उसकी भावना प्रार्थी और भक्त-जैसी थी।

विनोबाजी के साथ तेलगाना में यात्रा करते समय श्री अण्णासाहब सहस्रबुद्धे, जिनके ऊपर कोरापुट की गहन योजना कार्यान्वित करने का भार है, ग्रामदानवाले गांवों के विकास के संबंध में बहुत-से मसलों पर वार्त्ता के लिए आये थे। वर्तमान योजना के अनुसार, ग्रामदानवाली जमीन, गांववालों के बीच उनके परिवारों के आकार के अनुसार, और आम तौर पर परिवार के प्रत्येक सदस्य के लिए एक एकड़ जमीन के हिसाब से, बांटी जाती है। हां, भिन्न-भिन्न गांवों की परिस्थितियां भिन्न-

पर सामूहिक खेती के लिए सुरक्षित रखा जाता है। इस पंचायती जमीन की आमदनी का उपयोग सामाजिक सेवाओं, और ग्राम-पंचायत के प्राय: गांवों की सफाई, गांव की पाठशाला, मातृ-गृह, सांस्कृतिक कार्य और ग्रामीण उत्सव, आदि का खर्च पूरा करने के लिए होता है। छोटी काश्तकारों-वाली जमीन के मालिक भी खेती करने या कटाई, सिंचाई या उपज की बिक्री के संबंध में सहकारिता के तरीकों का सहारा ले सकते हैं।

विनोबाजी इस बात के लिए बड़े ही उत्सुक हैं कि ग्रामवासी गांव पर नए ढंग का जीवन आधारित करें। जमीन के पुनर्वितरण से इस जीवन की नई मान्यताएं कायम होनी चाहिए। अप्पासाहब के साथ बातचीत करते समय विनोबाजी ने ग्राम-पुनर्निर्माण के चार पहलुओं पर खास जोर दिया : जमीन का उचित और समान पुनर्वितरण और सहकारी खेती, ग्रामोद्योग का विकास, बुनियादी शिक्षा का प्रारंभ और देशी तरीकों तथा दवाओं के जरिए ग्रामीण स्वास्थ्य-संबंधी आयोजन। रचनात्मक कार्य के और भी बहुत-से विषय हैं, जिन्हें इन गांवों में शुरू किया जायगा। लेकिन भूदान, ग्रामोद्योग, बुनियादी शिक्षा और स्वास्थ्य—ये चार ही आधारशिलाएं हैं, जिनपर अन्त में हमारे ग्रामीण पुनर्निर्माण का ढांचा खड़ा होगा। विनोबाजी इस बात के लिए भी बहुत ही उत्सुक हैं कि गांव-वालों को अपने विकास का स्वयं आयोजन करने के उद्देश्य से आवश्यक आत्मविश्वास और प्रेरणा विकसित करने की अनुमति होनी चाहिए। सरकार भी निश्चित रूप से उनके इन प्रयत्नों में उनकी मदद करेगी। लेकिन आर्थिक और राजनैतिक शक्ति का एक बहुत ही बड़े पैमाने पर विकेंद्रीकरण होना चाहिए। यदि हम गांव वालों का विश्वास प्राप्त किये बगैर ही दिल्ली, लखनऊ या मद्रास में अपने सारे आयोजन का निर्देश करेंगे, तो निश्चित रूप से हम एक नौकरशाही व्यवस्था स्थापित करेंगे, जो अपनी केंद्रीकृत सत्ता के पाटों के बीच हमें कुचल-कर रख देगी। विनोबाजी का मत है कि यदि हम भारत में सच्चा राम-राज्य स्थापित करने के लिए उत्सुक हैं तो हमें ग्राम-राज्य अथवा ग्राम-पंचा-

दनों की सरकार स्थापित करने के लिए जरूरी कदम उठाने पड़ेंगे। विनोबाजी कहते हैं, "जिस हद तक सरकार से जनता के हाथ में सत्ता आयगी, उस हद तक अहिंसा का विकास होगा तथा राज्य की शक्ति धीरे-धीरे कम होकर आखिर में खत्म हो जायगी।" यही वजह है कि विनोबाजी भारत में जमीन के मसले को सरकारी कानूनों के जरिये नहीं, बल्कि भूदान-यज्ञ द्वारा हल करने के पक्षपाती हैं। वे कहते हैं, "सरकार कोई भी चीज हस्तगत कर सकती है, लेकिन जनता का हृदय कदापि नहीं।"

दरअसल, हर चीज के लिए सरकार का मुंह ताकना बहुत ही खतरनाक बात है। विनोबाजी राज्य को एक बाल्टी मानते हैं और जनता को कुआं। बाल्टी कुएं में से सिर्फ थोड़ा-सा ही पानी ले सकती है। इसी तरह, सरकार के पास जनता की क्षमता और शक्ति का बहुत ही कम अंश होता है। "मैंने अक्सर यह बात कही है कि सरकारी शक्ति एक शून्य (०) के समान है, जबकि जनता की शक्ति पूर्णांक (१) की तरह है। जब ये दोनों इकट्ठे कर दिये जाते हैं, तो हमें '१०' की संख्या मिलती है। इस तरह, जनता और राज्य की शक्तियां जब एक में जोड़ दी जाती हैं तो एक महान शक्ति का विकास होता है। लेकिन जब हम उनमें से किसीको भी अलग-अलग महत्त्व देंगे, जनता के पास केवल १ की शक्ति की रह जायगी और सरकार की शक्ति केवल शून्य बनकर रह जायगी।"

विनोबाजी कोरापुट जिले के अविच्छिन्न ग्रामदान क्षेत्र में राज्य और केंद्रीय सरकार के सहयोग का स्वागत करने को उत्सुक हैं। वास्तव में इस तरह का सहयोग पर्याप्त मात्रा में मिला भी है। लेकिन वह यह नहीं पसंद करेंगे कि हम क्षणभर के लिए भी इस बात को भुला दें कि हमें तले से आयोजन करना है। गहन विकास-योजना के अन्तर्गत, विनोबाजी के निर्देश के अनुसार, सर्व-सेवा-संघ खेती के विकास के लिए सस्ते सहकारी ऋण के मसले पर खास ध्यान देता रहा है। नालों और छोटी-छोटी नदियों पर बांध बांधने को ऊंची प्राथमिकता दी जा रही है, ताकि छोटी सिंचाई की सुविधाओं का विकास हो सके। कोरापुट के सर्वोदय-आयोजकों का ध्यान

: ४ :

भूदान और राज्यों का पुनर्गठन

अपनी बातचीत के सिलसिले में मुझे पता चला कि राज्यों के पुनर्गठन के संबंध में देश के कुछ हिस्सों में हुए झगड़े-फिसादों, अशांतियों तथा हिंसा के कारण विनोबाजी बेहद चिंतित हैं। उन्होंने मुझे आम यह स्वीकार किया कि इन हिंसात्मक कार्रवाइयों से स्पष्ट है कि उनका भूदान-आंदोलन सफल नहीं हो सका है। यद्यपि उन्हें बहुत बड़ी मात्रा में भूमि एकत्र करने में सफलता मिली है, फिर भी उनके लिए देश में अहिंसा की गहरी भावना उत्पन्न करना संभव नहीं हो सका है।

जब छोटे-बड़े लाखों दानियों ने अपनी जमीन का बहुत बड़ा हिस्सा भूदान में दे दिया है तो लोग इस बात को तय करने में कि कोई शहर, तालुका, या जिला इस राज्य में रहे या दूसरे राज्य में जाय, एक-दूसरे का सिर तोड़ने की कोशिश क्यों करते हैं? इससे इस बात का संकेत मिलता है कि यद्यपि हम अहिंसा की बातें करते हैं, फिर भी हम अभी तक अहिंसा की सच्ची भावना को अपने हृदय में स्थान नहीं दे सके हैं। विनोबाजी के अनुसार, भूदान-आंदोलन अनिवार्य रूप से क्रांतिकारी सामाजिक और आर्थिक सुधार करने के अहिंसात्मक ढंग का एक प्रयोग है। अतः यदि भूदान के बावजूद हिंसापूर्ण अशांतियां होती रहीं तो उस हदतक भूदान असफल कहा जायगा।

इस प्रकार की हिंसात्मक अशांतियों के बुनियादी कारण का विश्लेषण करते हुए विनोबाजी का यह मत है कि जनता के दिमाग में हिंसा और अहिंसा की क्षमता के बारे में कुछ बुनियादी अस्पष्टता है। आज के भारत में आमतौर पर यह बात मान ली गई है कि कोई अन्तर्राष्ट्रीय संघर्ष नहीं होना चाहिए और विभिन्न देशों के पारस्परिक संबंध अन्तर्राष्ट्रीय व्यवहार

: ४ :

भूदान और राज्यों का पुनर्गठन

अपनी बातचीत के सिलसिले में मुझे पता चला कि राज्यों के पुनर्गठन के संबंध में देश के कुछ हिस्सों में हुए झगड़े-फिसादों, अशांतियों तथा हिंसा के कारण विनोबाजी बेहद चिंतित हैं। उन्होंने खुले आम यह स्वीकार किया कि इन हिंसात्मक कार्रवाइयों से स्पष्ट है कि उनका भूदान-आंदोलन सफल नहीं हो सका है। यद्यपि उन्हें बहुत बड़ी मात्रा में भूमि एकत्र करने में सफलता मिली है, फिर भी उनके लिए देश में अहिंसा की गहरी भावना उत्पन्न करना संभव नहीं हो सका है।

जब छोटे-बड़े लाखों दानियों ने अपनी जमीन का बहुत बड़ा हिस्सा भूदान में दे दिया है तो लोग इस बात को तय करने में कि कोई शहर, तालुका, या जिला इस राज्य में रहे या दूसरे राज्य में जाय, एक-दूसरे का सिर तोड़ने की कोशिश क्यों करते हैं ? इससे इस बात का संकेत मिलता है कि यद्यपि हम अहिंसा की बातें करते हैं, फिर भी हम अभी तक अहिंसा की सच्ची भावना को अपने हृदय में स्थान नहीं दे सके हैं। विनोबाजी के अनुसार, भूदान-आंदोलन अनिवार्य रूप से क्रांतिकारी सामाजिक और आर्थिक सुधार करने के अहिंसात्मक ढंग का एक प्रयोग है। अतः यदि भूदान के बावजूद हिंसापूर्ण अशांतियां होती रहीं तो उस हदतक भूदान असफल कहा जायगा।

इस प्रकार की हिंसात्मक अशांतियों के बुनियादी कारण का विश्लेषण करते हुए विनोबाजी का यह मत है कि जनता के दिमाग में हिंसा और अहिंसा की क्षमता के बारे में कुछ बुनियादी अस्पष्टता है। आज के भारत में आमतौर पर यह बात मान ली गई है कि कोई अन्तर्राष्ट्रीय संघर्ष नहीं होना चाहिए और विभिन्न देशों के पारस्परिक संबंध अंतर्राष्ट्रीय व्यवहार

: ४ :

भूदान और राज्यों का पुनर्गठन

अपनी बातचीत के सिलसिले में मुझे पता चला कि राज्यों के पुनर्गठन के संबंध में देश के कुछ हिस्सों में हुए झगड़े-फिसादों, अशान्तियों तथा हिंसा के कारण विनोबाजी बेहद चिंतित हैं। उन्होंने मुझसे साफ यह स्वीकार किया कि इन हिंसात्मक कार्रवाइयों से स्पष्ट है कि उनका भूदान-आंदोलन सफल नहीं हो सका है। यद्यपि उन्हें बहुत बड़ी मात्रा में भूमि एकत्र करने में सफलता मिली है, फिर भी उनके लिए देश में अहिंसा की गहरी भावना उत्पन्न करना संभव नहीं हो सका है।

जब छोटे-बड़े लाखों दानियों ने अपनी जमीन का बहुत बड़ा हिस्सा भूदान में दे दिया है तो लोग इस बात को तय करने में कि कोई शहर, तालुका, या जिला इस राज्य में रहे या दूसरे राज्य में जाय, एक-दूसरे का सिर तोड़ने की कोशिश क्यों करते हैं ? इससे इस बात का संकेत मिलता है कि यद्यपि हम अहिंसा की बातें करते हैं, फिर भी हम अभी तक अहिंसा की सच्ची भावना को अपने हृदय में स्थान नहीं दे सके हैं। विनोबाजी के अनुसार, भूदान-आंदोलन अनिवार्य रूप से क्रांतिकारी सामाजिक और आर्थिक सुधार करने के अहिंसात्मक ढंग का एक प्रयोग है। अतः यदि भूदान के बावजूद हिंसापूर्ण अशान्तियां होती रहीं तो उस हद तक भूदान असफल कहा जायगा।

इस प्रकार की हिंसात्मक अशान्तियों के बुनियादी कारण का विश्लेषण करते हुए विनोबाजी का यह मत है कि जनता के दिमाग में हिंसा और अहिंसा की क्षमता के बारे में कुछ बुनियादी अस्पष्टता है। आज के भारत में आमतौर पर यह बात मान ली गई है कि कोई अन्तर्राष्ट्रीय संघर्ष नहीं होना चाहिए और विभिन्न देशों के पारस्परिक संबंध अन्तर्राष्ट्रीय व्यवहार

तर भारतीय जनता, भाषा, लिपि, सामाजिक रीति-रिवाजों, इत्यादि में विभिन्नता होने के बावजूद, काश्मीर से लेकर कन्याकुमारी तक और सौराष्ट्र से लेकर आसाम के दूरस्थ पूर्व तक, अपने-आपको भारत माता की ही सतान समझती है। इसलिए विनोबाजी ने सुझाया है कि देश के सभी राजनैतिक दलों के प्रतिनिधियों की एक सभा की जाय, जिसमें सब मिलकर यह समझौता करें कि उनकी विचारधारा में चाहे किसी भी प्रकार की राजनैतिक और उद्देश्यात्मक असमानताए हो, वे अपने कार्यक्रमो में हिंसा और अव्यवस्था को स्थान नहीं देंगे। भारत की सभी राजनैतिक सस्थाओं का इस बात पर राजी होना बहुत आवश्यक है कि वे केवल लोक-तत्रात्मक तरीकों और शातिपूर्ण ढग से ही सब प्रकार के झगडो का फैसला करवाने के लिए जनमन को जागृत करेंगी। इस किस्म के समझौतो के बिना भारत में लोकतत्र की सफलता सम्भव नही।

भूदान के उसूलों को राज्यों के पुनर्गठन के कठिन मसले के, विशेषकर बबई नगर-जैसे मामले में सुलझाने के लिए अपनाते हुए विनोबाजी ने कहा है कि एक सच्चे सत्याग्रही को चाहिए कि यह मत रखते हुए भी कि बबई महाराष्ट्र का भाग होना चाहिए, बबई के अल्पसख्यक गुजरातियों पर ही इस मसले का फैसला छोड दें। भूदान हमें विशाल हृदय बनने की शिक्षा देता है और हमें अपने पडोसी के सतोष के लिए कुरबानी करने की बात भी सिखाता है। भूदान जोर-जबरदस्ती की भावना और आपसी झगडो की बात बर्दाश्त नहीं करता। अत विनोबाजी बबई राज्य के लिए एक द्विभाषी राज्य की स्थापना के पक्ष में हैं, जिसमें गुजराती और महाराष्ट्रीय भाई मिल-कर मित्रता और सौहार्द से रहे, जैसे कि वे पिछले सौ-डेढसौ वर्षों से रहते आये हैं।

विनोबाजी उन लोगों में से नहीं हैं जो यह सोचते हैं कि भाषा के आधार पर राज्यों का पुनस्सगठन एक बहुत भयानक गलती है। इसके विपरीत, उनका यह दृढ़ निश्चय है कि भारत में राज्यो की स्थापना भाषा के आधार पर ही होनी चाहिए, क्योंकि किसी भी राज्य के लोगों को यह अधिकार

तर भारतीय जनता, भाषा, लिपि, सामाजिक रीति-रिवाजों, इत्यादि में विभिन्नता होने के बावजूद, काश्मीर से लेकर कन्याकुमारी तक और सौराष्ट्र से लेकर आसाम के दूरस्थ पूर्व तक, अपने-आपको भारत माता की ही सतान समझती है। इसलिए विनोबाजी ने सुझाया है कि देश के सभी राजनैतिक दलों के प्रतिनिधियों की एक सभा की जाय, जिसमें सब मिलकर यह समझौता करें कि उनकी विचारधारा में चाहे किसी भी प्रकार की राजनैतिक और उद्देश्यात्मक असमानताएं हों, वे अपने कार्यक्रमों में हिंसा और अव्यवस्था को स्थान नहीं देंगे। भारत की सभी राजनैतिक सस्थाओं का इस बात पर राजी होना बहुत आवश्यक है कि वे केवल लोक-तन्त्रात्मक तरीकों और शान्तिपूर्ण ढग से ही सब प्रकार के झगड़ों का फैसला करवाने के लिए जनमत को जागृत करेंगी। इस किस्म के समझौतों के बिना भारत में लोकतन्त्र की सफलता सम्भव नहीं।

भूदान के उसूलों को राज्यों के पुनर्गठन के कठिन मसले के, विशेषकर बबई नगर-जैसे मामले में सुलझाने के लिए अपनाते हुए विनोबाजी ने कहा है कि एक सच्चे सत्याग्रही को चाहिए कि वह मत रखते हुए भी कि बबई महाराष्ट्र का भाग होना चाहिए, बबई के अल्पसंख्यक गुजरातियों पर ही इस मसले का फैसला छोड़ दे। भूदान हमें विशाल हृदय बनने की शिक्षा देता है और हमें अपने पड़ोसी के सतोष के लिए कुरबानी करने की बात भी सिखाता है। भूदान जोर-जबरदस्ती की भावना और आपसी झगड़ों की बात बर्दाश्त नहीं करता। अब विनोबाजी बबई राज्य के लिए एक द्विभाषी राज्य की स्थापना के पक्ष में हैं, जिसमें गुजराती और महाराष्ट्रीय भाई मिल-कर मित्रता और सौहार्द से रहें, जैसे कि वे पिछले सौ-डेढ़ सौ वर्षों से रहते आये हैं।

विनोबाजी उन लोगों में से नहीं हैं जो यह सोचते हैं कि भाषा के आधार पर राज्यों का पुनस्सगठन एक बहुत भयानक गलती है। इसके विपरीत, उनका यह दृढ़ निश्चय है कि भारत में राज्यों की स्थापना भाषा के आधार पर ही होनी चाहिए, क्योंकि किसी भी राज्य के लोगों को यह अधिकार

के पाच सिद्धातो, अर्थात् पचशील द्वारा अनुशासित होने चाहिए। यह संबंध प्रेम, सद्भावना और स्नेह पर निर्धारित होना चाहिए। लेकिन बहुत-से लोगो के दिमाग में यह बात स्पष्ट नही है कि सामाजिक या सामूहिक व्यवहार में हिंसा का तनिक भी प्रयोग नही होना चाहिए। दरअसल, ब्रिटिश शासन के विरुद्ध सन् १६४२ की 'खुली क्राति', और खास तौर पर, नेताजी सुभाषचद्र बोस की भारतीय राष्ट्रीय सेना के कार्यों ने देश में यह भावना उत्पन्न कर दी कि भारत में राजनैतिक आजादी कम-से-कम कुछ अंश तक अशाति, हिसा और लूट-खसोट के दबाव के कारण प्रदान की गई थी। इसी प्रकार श्री रामुलू की मृत्यु के बाद हुए अनेक हिंसापूर्ण झगड़े-फिसादो के तुरत बाद आध्र राज्य की स्थापना से भी इस धारणा को बहुत बल मिला कि सामाजिक जीवन में हिंसा लाभदायक सिद्ध होती है।

हमारे राष्ट्रीय नेताओं ने कई बार यह बात दुहराई है कि नए आध्र राज्य की स्थापना में हिंसात्मक प्रवृत्तियो का कोई भी हिस्सा नही था। ज्यादा-से ज्यादा इसे संयोगमात्र कहा जा सकता है। लेकिन जब एक गलत धारणा लोगों के दिमागों में घर कर लेती है तो उसे मिटाना कठिन हो जाता है। इसी लिए विनोबाजी ने कहा था कि लोग अपने घर महात्मा गाधी और सुभाषचंद्र बोस, दोनो के चित्र टागे हुए हैं। उन लोगों का कहना है कि कभी-कभी अहिंसात्मक कार्यों और सत्याग्रह करने से फायदा होता है और कभी-कभी किसी ग्राम आदोलन के लक्ष्यो को प्राप्त करने के लिए शोरगुल मचाने और हिंसात्मक प्रदर्शन से भी अपना मतलब हल हो सकता है। विनोबाजी के मतानुसार जनता के दिमाग में ऐसी गलत धारणाए ही देश में विभिन्न स्थानो पर हिंसात्मक उथल-पुथल की सबसे बडी वजह होती है।

लेकिन विनोबाजी का, साथ ही, यह भी विचार है कि इस बात का एक आशावादी पक्ष भी है। जहा कि यूरोप के लोग एक-दूसरे के साथ अलग-राष्ट्रों के नाते लड़ते-झगडते आये हैं, वहां भारत की जनता भारत-भूत राष्ट्रीय एकता की भावना को भूले बिना ही हिंसात्मक कार्य

तथ्य इससे कुछ भिन्न भी हो सकते हैं। लेकिन ज्यादा-

तर भारतीय जनता, भाषा, लिपि, सामाजिक रीति-रिवाजों, इत्यादि में विभिन्नता होने के बावजूद, काश्मीर से लेकर कन्याकुमारी तक और सौराष्ट्र से लेकर आसाम के दूरस्थ पूर्व तक, अपने-आपको भारत माता की ही संतान समझती है। इसलिए विनोबाजी ने सुझाया है कि देश के सभी राजनैतिक दलों के प्रतिनिधियों की एक सभा की जाय, जिसमें सब मिलकर यह समझौता करें कि उनकी विचारधारा में चाहे किसी भी प्रकार की राजनैतिक और उद्देश्यात्मक असमानताएं हों, वे अपने कार्यक्रमों में हिंसा और अव्यवस्था को स्थान नहीं देंगे। भारत की सभी राजनैतिक संस्थाओं का इस बात पर राजी होना बहुत आवश्यक है कि वे केवल लोक-तंत्रात्मक तरीकों और शांतिपूर्ण ढंग से ही सब प्रकार के झगड़ों का फैसला करवाने के लिए जनमत को जागृत करेंगी। इस किस्म के समझौतों के बिना भारत में लोकतंत्र की सफलता सम्भव नहीं।

भूदान के उसूलों को राज्यों के पुनर्गठन के कठिन मसले के, विशेषकर बबई नगर-जैसे मामले में सुलझाने के लिए अपनाते हुए विनोबाजी ने कहा है कि एक सच्चे सत्याग्रही को चाहिए कि यह मत रखते हुए भी कि बबई महाराष्ट्र का भाग होना चाहिए, बबई के अल्पसंख्यक गुजरातियों पर ही इस मसले का फैसला छोड़ दें। भूदान हमें विशाल हृदय बनने की शिक्षा देता है और हमें अपने पड़ोसी के संतोष के लिए कुरबानी करने की बात भी सिखाता है। भूदान जोर-जबरदस्ती की भावना और आपसी झगड़ों की बात बर्दाश्त नहीं करता। अत विनोबाजी बबई राज्य के लिए एक द्विभाषी राज्य की स्थापना के पक्ष में हैं, जिसमें गुजराती और महाराष्ट्रीय भाई मिल-कर मित्रता और सौहार्द से रहें, जैसे कि वे पिछले सौ-डेढ़सौ वर्षों से रहते आये हैं।

विनोबाजी उन लोगों में से नहीं हैं जो यह सोचते हैं कि भाषा के आधार पर राज्यों का पुनस्संगठन एक बहुत भयानक गलती है। इसके विपरीत, उनका यह दृढ़ निश्चय है कि भारत में राज्यों की स्थापना भाषा के आधार पर ही होनी चाहिए, क्योंकि किसी भी राज्य के लोगों को यह अधिकार

है कि वे वहा का प्रशासन-कार्य अपनी ही भाषा में सपादित करें और उनके बच्चो का यह जन्मसिद्ध अधिकार है कि वे अपनी क्षेत्रीय या मातृ-भाषा में शिक्षा प्राप्त कर सकें। कठिनाई तब पेश आती है जब एक भाषाभाषी दल दूसरी भाषा बोलनेवालो के प्रति दुश्मनी और असौहार्द की भावना प्रदर्शित करता है।

विनोबाजी के मतानुसार इस प्रकार की दुश्मनी या असौहार्द पथ-भ्रष्टता का प्रतीक है और निश्चय ही शोचनीय है। लेकिन उसका मतलब यह नही है कि भाषावार राज्यो की स्थापना का विचार ही छोड दिया जाय। हमें लोगो को सही प्रकार की शिक्षा देनी चाहिए और उनके दिमाग में दूरदर्शिता का भाव विकसित करना चाहिए। किसी अच्छी चीज को भी बुरा कहा जा सकता है, लेकिन इसका अर्थ यह नही होता कि हम उसे सिर्फ इसलिए त्याग दें कि कही लोग इसे बुरा न कहने लग जाय। भाषा तो लोगो को आपस मे मिलाने के हेतु प्रयोग में लानी चाहिए, न कि उनमें फूट और झगडे की भावना पैदा करने के लिए। विनोबाजी ने देश की सभी प्रमुख भाषाओ का अध्ययन किया है और वे उनसे प्रेम करते हैं। वह यह सोच ही नही पाते कि लोग कैसे अपनी मातृभाषा से प्यार करते हुए दूसरो की भाषा से घृणा करने की बात दिमाग में ला सकते है।

: ५ :

भूदान और बुनियादी शिक्षा

इस सप्ताह में कई दिन तक बुनियादी शिक्षा के बारे में हमारी बातचीत होती रही। डा० के० एल० श्रीमाली, केंद्रीय उप-शिक्षामंत्री और श्रीमती आशादेवी भी कुछ समय के लिए हमारी बातचीत में मौजूद थे। विनोबाजी का विचार है कि विद्यार्थियों के लिए भौतिक और सामाजिक हालात तथा अन्य विषयों के अध्ययन और उनके संबंधों को समझने में भूदान-आंदोलन सबसे अधिक बुनियादी कार्यक्रम सिद्ध हो सकता है। भूदान में भूमि, खाद्य पदार्थ, ग्रामोद्योग तथा जीवन की आर्थिक मान्यताएं सभी शामिल हैं। भूदान गांवों और शहरों, दोनों में ही शिक्षा का एक उच्चतम माध्यम बन सकता है। अतः यह प्रयत्न किया जाना चाहिए कि बुनियादी शिक्षा को भूदान से संबंधित किया जाय, ताकि शिक्षा अधिक व्यावहारिक और लाभप्रद बन सके। भूदान-आंदोलन को भी अध्यापकों तथा शिक्षार्थियों से अधिक सहयोग प्राप्त हो सकेगा। विनोबाजी के मतानुसार बुनियादी शिक्षा पढ़ाई का एक नया ढंग ही नहीं है, यह नई किस्म की सामाजिक और आर्थिक मान्यताओं के आधार पर एक नए प्रकार के जीवन का निर्माण करना भी है।

अध्यापकों के बारे में बोलते हुए विनोबाजी ने कहा कि अध्यापकों को बुनियादी शिक्षा के नए तरीके के बारे में शिक्षा देना बहुत आवश्यक है। यदि पुरानी शिक्षा-प्रणाली के कुछ अध्यापक नई तालीम को पसंद नहीं करते और इसके सिद्धांतों के विरुद्ध हैं तो उन्हें चाहिए कि वे सम्मान के साथ अवकाश प्राप्त कर लें और जो लोग इस कार्य को पूरी आस्था और निश्चय के साथ करना चाहते हैं उनके लिए जगह खाली कर दें। इन अवकाश-प्राप्त अध्यापकों को कुछ पेंशन दी जा सकती है, लेकिन उन्हें देश में बुनियादी

है कि वे वहां का प्रशासन-कार्य अपनी ही भाषा में सम्पादित करें और उनके बच्चों का यह जन्मसिद्ध अधिकार है कि वे अपनी क्षेत्रीय या मातृ भाषा में शिक्षा प्राप्त कर सकें। कठिनाई तब पेश आती है जब एक भाषाभाषी दूसरी भाषा बोलनेवालों के प्रति दुश्मनी और असौहार्द की भावना प्रदर्शित करता है।

विनोबाजी के मतानुसार इस प्रकार की दुश्मनी या असौहार्द पथ-भ्रष्टता का प्रतीक है और निश्चय ही शोचनीय है। लेकिन उसका मतलब यह नहीं है कि भाषावार राज्यों की स्थापना का विचार ही छोड़ दिया जाय। हमें लोगों को सही प्रकार की शिक्षा देनी चाहिए और उनके दिमाग में दूरदर्शिता का भाव विकसित करना चाहिए। किसी अच्छी चीज को भी बुरा कहा जा सकता है, लेकिन इसका अर्थ यह नहीं होता कि हम उसे सिर्फ इसलिए त्याग दें कि कहीं लोग इसे बुरा न कहने लग जायं। भाषा तो लोगों को आपस में मिलाने के हेतु प्रयोग में लानी चाहिए, न कि उनमें फूट और झगड़े की भावना पैदा करने के लिए। विनोबाजी ने देश की सभी प्रमुख भाषाओं का अध्ययन किया है और वे उनसे प्रेम करते हैं। वह यह सोच ही नहीं पाते कि लोग कैसे अपनी मातृभाषा से प्यार करते हुए दूसरों की भाषा से घृणा करने की बात दिमाग में ला सकते हैं।

मेरेलिए दूसरी भाषाओं को सीखना अब बच्चों का खेल-सा बन गया है।"
अतः वे प्राथमिक काल में अंग्रेजी की शिक्षा दिलाने के विरुद्ध हैं। हां,
भारत की राष्ट्रभाषा हिंदी उत्तर-प्राथमिक काल में सिखाई जानी चाहिए।

विनोबाजी ने एक नया सुझाव दिया। देश की विभिन्न भाषाएं
सीखने में सहायता देने के लिए सरकार को चाहिए कि वह क्षेत्रीय और
नागरी लिपि—दोनों को ही सही माने, तथा विद्यालयों की पुस्तकों को
स्थानीय और नागरी लिपि में एक साथ प्रकाशित करे। साथ ही प्रकाशकों
को भी ऐसा करने का प्रोत्साहन देना चाहिए। इस प्रकार, बालकों में
उत्साह उत्पन्न होगा कि वे अपनी मातृभाषा भी देवनागरी लिपि में ही
सीखें, विशेष रूप से इसलिए कि उन्हें हिंदी राष्ट्रीय अथवा केंद्रीय भाषा
के रूप में सीखनी ही पड़ेगी। धीरे-धीरे सभी भाषाओं के लिए नागरी-
लिपि का प्रयोग स्वाभाविक रूप से बढ़ने लगेगा। ऐसा किया जाना राष्ट्रीय
दृष्टिकोण से बहुत वांछनीय है। इससे लगभग एक दर्जन विभिन्न लिपियों
में किताबें छापने के अनावश्यक व्ययों में भी बहुत भारी कमी हो जायगी।
साथ ही, इससे बालकों और प्रौढ़ों के लिए भारत की विभिन्न भाषाएं
सीखने के रास्ते में से कठिनाइयां दूर हो जायगी, क्योंकि अलग-अलग
लिपियों की परेशानी नहीं उठानी पड़ेगी। विनोबाजी ने यह भी सुझाया
कि इस ओर कन्नड़ लिपि से शुरुआत की जा सकती है, जो लिपि और
शब्दावली, दोनों ही तरह से हिंदी के बहुत समीप है।

आदिवासी क्षेत्रों में क्षेत्रीय भाषा के लिए नागरी लिपि का प्रयोग
बहुत लाभप्रद सिद्ध होगा। इन पिछड़ी हुई जातियों के बालकों के लिए
क्षेत्रीय तथा राष्ट्रीय भाषाओं का अध्ययन आवश्यक है और उनके लिए
उन्हें नागरी लिपि में दोनों भाषाएं सीखना काफी आसान रहेगा।

बुनियादी शिक्षा साधारण प्राथमिक शिक्षा से अधिक महंगी है, इस
आलोचना के बारे में बातचीत करते हुए विनोबाजी ने यह बात स्पष्ट
रूप से कही कि बुनियादी विद्यालयों में दस्तकारी का चलन केवल ऊपरी
ढंग से ही नहीं किया जाना चाहिए। उन्होंने यह भी कहा कि कोई

शिक्षा के कार्यक्रम में बाधक होने की इजाजत नहीं दी जा सकती।

विनोबाजी के विचार इस बात पर बहुत साफ हैं कि सरकारी नौक-रियों में भर्ती के लिए विश्वविद्यालयों और अन्य संस्थाओं की डिग्रियों, डिप्लोमा, आदि को बहुत महत्व न दिया जाय। सरकार को चाहिए कि वह विभिन्न प्रकार की सेवाओं के लिए भिन्न-भिन्न प्रकार की परीक्षाएं नियोजित करे। उम्मीदवारों के आंतरिक गुणों के आधार पर उन्हें मुका-बले के इम्तहानों के बाद चुना जाय। इस तरह बुनियादी शिक्षा-प्राप्त व्यक्तियों के लिए यह सम्भव होगा कि वह अपने विकसित गुणों और व्यावहारिक अनुभवों के आधार पर अपने लिए स्थान बना सकें। मैंने इस बात को केंद्रीय शिक्षा-मन्त्रालय के सम्मुख रखने का वचन दिया, जो इस मसले का निरीक्षण करने के लिए एक समिति नियुक्त कर चुकी है। इस समिति के प्रधान डा० लक्ष्मणस्वामी मुदल्यार थे। समिति की रिपोर्ट में इस बात की मान्यता दी गई है कि सरकारी नौकरियों के लिए, सिवा भारतीय प्रशासन सेवा के, विश्वविद्यालयों की डिग्रियों को अनिवार्य न समझा जाय। प्रशासन सेवाओं के लिए डिग्रियों की जरूरत के बारे में भी कुछ लोगों के विचार इसके विरुद्ध हैं।

बुनियादी शिक्षा की व्यवस्था के अंतर्गत, अंग्रेजी और अन्य विदेशी भाषाओं के स्थान के बारे में चर्चा करते हुए विनोबाजी ने कहा कि प्राथ-मिक शिक्षा के दौरान में, अर्थात् ६ वर्ष तक की आयु के शिक्षार्थियों को उनकी मातृभाषा की पूरी शिक्षा दी जानी चाहिए और अंग्रेजी अथवा किसी भी अन्य विदेशी भाषा की शिक्षा उन्हें उत्तर-बुनियादी शिक्षा-काल में दी जानी चाहिए।

अपने बारे में बताते हुए विनोबाजी ने कहा कि बाल्यावस्था में अपनी मातृभाषा (मराठी) को पूरी तरह सीख लेने के फलस्वरूप ही वह भारत की अन्य भाषाओं की काम-चलाऊ जानकारी प्राप्त करने में सफल हो सके। विनोबाजी ने स्वाभाविक रूप से कहा, "अब चूंकि मैं मराठी, इसका व्याकरण और इसके मुहावरे आदि बहुत अच्छी तरह जानता हूं, इसलिए

सुधारा जाय तो उनपर काफी व्यय आयगा। इस समय प्राथमिक स्कूलों में अध्यापक को बहुत थोड़ी तनख्वाहें दी जाती हैं, उनकी इमारतें टूटी-फूटी हैं तथा उनमें वैज्ञानिक शिक्षा के लिए कोई साधन उपलब्ध नहीं हैं। इन स्कूलों को सुधारने के लिए काफी धन की आवश्यकता होगी। लेकिन अगर उन्हें बुनियादी शिक्षा-केंद्रों में परिवर्तित कर दिया जाय तो निश्चय ही इनपर अतिरिक्त व्यय की मात्रा उपरोक्त प्रकार के स्कूलों के मुकाबले में बहुत कम होगी।

बातचीत के दौरान में विनोबाजी ने एक और महत्वपूर्ण बात कही, जो किसी हदतक विवादास्पद भी है। उनके मतानुसार भारत-जैसे गर्म देश में शिक्षा अठारह वर्ष की आयु तक पूर्ण हो जानी चाहिए। आठ साल की बुनियादी शिक्षा के बाद चार साल की उत्तर बुनियादी और विश्वविद्यालय की शिक्षा होनी चाहिए, जो कि स्नातक के स्तर के लगभग हो। विनोबाजी का विचार है कि भारत में औसत आयु, किशोरावस्था एवं प्रौढ़ता यूरोपीय देशों की अपेक्षा कहीं कम है। इसलिए हमें चाहिए कि हम अपने बच्चों को बारह वर्षों में सब प्रकार की आवश्यक शिक्षा दिला दें।

यद्यपि विनोबाजी के उपरोक्त तर्क में बहुत शक्ति है, तथापि यह निश्चित रूप से नहीं कहा जा सकता कि अठारह वर्ष में विद्यार्थी ऊंचे दर्जे की यह शिक्षा ग्रहण करने के योग्य हो जाता है जो कि विदेशों में अठारह वर्ष की आयु के बाद शिक्षार्थियों को दिलाई जाती है। निस्संदेह, बुनियादी तथा उत्तर-बुनियादी शिक्षा-प्राप्त लोग सरकारी कार्यों में, विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्रों में, अधिक उपयोगी सिद्ध होंगे और इन योजनाओं के लिए आवश्यक लोगों की भर्ती के समय उन्हें निश्चय प्राथमिकता दी जानी चाहिए।

भी ऐसी दस्तकारी, जो कि गावों में प्रचलित नहीं है, बुनियादी विद्यालयों में प्रारम्भ नहीं की जानी चाहिए। शिक्षा के लिए स्थानीय दस्तकारियों को ही उपयोग में लाने के लिए प्रयत्न किया जाना चाहिए। बुनियादी स्कूलों के साथ विशेष दस्तकारी के कारखाने बनाने के लिए सरकार को अतिरिक्त धन का व्यय नहीं करना चाहिए। गावों में वर्तमान विद्यालयों में ही साधारण दस्तकारियों के साथ-साथ शिक्षार्थियों को इतिहास, भूगोल, गणित, सामाजिक एवं भौतिक विज्ञान, आदि की शिक्षा दी जानी चाहिए।

विनोबाजी ने इस बात का भी उल्लेख किया कि द्वितीय पचवर्षीय योजना तथा सामुदायिक विकास-योजना के अतर्गत सरकार करोड़ो रुपये छोटे, ग्राम तथा कुटीर उद्योगों पर व्यय करेगी। यह आवश्यक है कि इस औद्योगिक विकास को शहरों और गांवों में बुनियादी शिक्षा के विकास के साथ सम्बद्ध किया जाय। विभिन्न प्रयत्नों को दुहराया नहीं जाना चाहिए और यह कोशिश करनी चाहिए कि ग्राम एवं घरेलू उद्योगों के उत्पादन एवं प्रशिक्षण-केंद्रों में ही बुनियादी स्कूलों के उत्पादन और प्रशिक्षण के कार्यों को सपन्न किया जाय। बुनियादी विद्यालयों की इमारतें सादी और कलापूर्ण ढग से निर्मित की जानी चाहिए और उनके निर्माण मे व्यय को कम करने के लिए स्थानीय मसालों का ही उपयोग किया जाना चाहिए। बुनियादी स्कूलों के लिए ग्रामवासियों को भूमिदान के लिए उत्साहित करना चाहिए। इस सिलसिले में भूदान-आंदोलन द्वारा स्वस्थ वातावरण पैदा हुआ है और इससे लाभ उठाना चाहिए। बुनियादी स्कूल के लिए प्राप्त भूमि पर अध्यापकों और शिक्षार्थियों को साग, फल और सब्जियां उगानी चाहिए, जिन्हें विद्यालय के वासी अपने उपयोग में ला सकें।

यदि इस ढग पर विद्यालय प्रारभ किये जाय तो, विनोबाजी का निश्चित मत है, कि ऐसी संस्थाएं न केवल हमारे बालकों को बेहतर शिक्षा प्रदान करेंगी, अपितु अन्य शिक्षा-केंद्रों के मुकाबले में सस्ती भी होंगी। हमें यह भी ध्यान में रखना चाहिए कि यदि साधारण विद्यालयों को

सुधारा जाय तो उनपर काफी व्यय आयगा। इस समय प्राथमिक स्कूलों में अध्यापक को बहुत थोड़ी तनख्वाहें दी जाती हैं, उनकी इमारतें टूटी-फूटी हैं तथा उनमें वैज्ञानिक शिक्षा के लिए कोई साधन उपलब्ध नहीं हैं। इन स्कूलों को सुधारने के लिए काफी धन की आवश्यकता होगी। लेकिन अगर उन्हें बुनियादी शिक्षा-केंद्रों में परिवर्तित कर दिया जाय तो निश्चय ही इनपर अतिरिक्त व्यय की मात्रा उपरोक्त प्रकार के स्कूलों के मुकाबले में बहुत कम होगी।

बातचीत के दौरान में विनोबाजी ने एक और महत्वपूर्ण बात कही, जो किसी हदतक विवादास्पद भी है। उनके मतानुसार भारत-जैसे गर्म देश में शिक्षा अठारह वर्ष की आयु तक पूर्ण हो जानी चाहिए। आठ साल की बुनियादी शिक्षा के बाद चार साल की उत्तर बुनियादी और विश्वविद्यालय की शिक्षा होनी चाहिए, जो कि स्नातक के स्तर के लगभग हो। विनोबाजी का विचार है कि भारत में औसत आयु, किशोरावस्था एव प्रौढ़ता यूरोपीय देशों की अपेक्षा कहीं कम है। इसलिए हमें चाहिए कि हम अपने बच्चों को बारह वर्षों में सब प्रकार की आवश्यक शिक्षा दिला दें।

यद्यपि विनोबाजी के उपरोक्त तर्क में बहुत शक्ति है, तथापि यह निश्चित रूप से नहीं कहा जा सकता कि अठारह वर्ष में विद्यार्थी ऊंचे दर्जे की वह शिक्षा ग्रहण करने के योग्य हो जाता है जो कि विदेशों में अठारह वर्ष की आयु के बाद शिक्षार्थियों को दिलाई जाती है। निस्सदेह, बुनियादी तथा उत्तर-बुनियादी शिक्षा-प्राप्त लोग सरकारी कार्यों में, विशेष

: ६ :

ग्रामोद्योग और विकेंद्रित उत्पादन

प्रातःकाल पैदल चलते हुए एक बातचीत के सिलसिले में विनोबाजी ने मुझसे ग्राम और कुटीर उद्योगों के संबंध में अपने विचार व्यक्त किये। उन्होंने कहा, "कुछ लोगों का खयाल है कि मैं झक्की हूं, किंतु झक्की होने के अलावा मैं एक आधुनिक वैज्ञानिक भी होने का दावा करता हूं। यह सोचना गलत है कि मैं ग्रामोद्योगों की प्रविधि सुधारने में आधुनिक विज्ञान के उपयोग का पक्षपाती नहीं हूं। दरअसल, मेरा मत है कि आधुनिक विज्ञान संतोषजनक और पर्याप्त प्रगतिशील नहीं है। उदाहरण के लिए, मेरी समझ में यह बात नहीं आती कि हमारे हवाई जहाज तेज और ज्यादा आरामदेह क्यों न हों। मैं आम-तौर पर पैदल चलना इसलिए पसंद करता हूं कि जनता से मेरा सजीव संपर्क बना रहे और मेरी बातें हवाई न होने पावें। लेकिन यदि किसी वजह से मुझे हवाई सफर करना पड़े तो मैं ऐसे जहाज से यात्रा करना पसंद करूंगा, जो दिल्ली या लंदन या न्यूयार्क तक मुझे कुछ ही मिनटों में पहुंचा दे।"

गांधीजी की भांति ही विनोबाजी भी ग्राम और कुटीर उद्योगों पर ज्यादा जोर इसलिए देते हैं कि वे स्वयं रोजाना देखते हैं कि गांव के लोग नियमित या पूरे समय का धंधा न होने की वजह से अपना समय और अपनी शक्ति किस तरह बर्बाद करने के लिए मजबूर हैं। इस बेरोजगारी और अर्द्ध-बेरोजगारी की वजह से न सिर्फ उनकी शारीरिक हानि होती है, अपितु उनकी मानसिक और नैतिक शक्तियां भी क्षीण हो जाती हैं।

पिछले समय बाढ़ के समय बिहार का भ्रमण करते समय विनोबाजी

को यह देखकर बड़ा दुःख हुआ कि बेहद बरसात या बाढ़ की वजह से खेती का कारोबार बंद हो जाता है तो गाँव-वालों को हाथ-पर-हाथ रख कर बेकार बैठे रहने के सिवा कोई चारा ही नहीं है। ये लोग भयंकर ग्रार्थिक संकट या शारीरिक दुःख की हालत में भी दान या दया के सहारे जीने के लिए तैयार नहीं। वे हमेशा कोई उत्पादक ग्रौर लाभदायक काम करना चाहते हैं, लेकिन दुर्भाग्य की बात यह है कि उनके पास खेती के ग्रलावा कोई दूसरा काम ही नहीं है। जब खेती मारी जाती है तो सारा ग्रामीण जीवन ही चौपट हो जाता है। विनोबाजी के ग्रनुसार हमारी राष्ट्रीय ग्रर्थ-व्यवस्था का यह ग्रत्यंत दुखद पहलू है। मिलों की प्रति-स्पर्धा के कारण हमारे ग्रामोद्योग एक-एक करके मिटते जा रहे हैं। पहले हमारे यहां लाखों सूत कातनेवाले ग्रौर बुनकर थे ग्रौर हर कुटीर गाँव की छोटी सूती मिल थी। हजारों कारीगर धातु, लकड़ी ग्रौर दूसरे कच्चे माल के सामान तैयार करते थे। गाँवों में तेल की घानियां थीं, जहां से गाँववाले ताजा ग्रौर शुद्ध तेल पा सकते थे। बहुत-से मोची का काम करनेवाले थे, जो चप्पल, जूते, ग्रादि तैयार करते थे। गाँववालों के तत्काल इस्तेमाल के लिए मिट्टी के बर्तन तैयार करनेवाले कुम्हार भी थे। लेकिन धीरे-धीरे शहर द्वारा गाँव के शोषण की प्रक्रिया में ये सभी ग्रामोद्योग नष्ट होते गये। इस दिशा में सरकारी नीति भी बहुत कुछ ग्रस्पष्ट ग्रौर धीमी रही है।

कि हमारे अधिकांश उपभोक्ता-वस्तु-उद्योग विकेंद्रित आधार पर पड़ने-वाले अनावश्यक तनाव को भी कम करेंगे। कच्चे माल को दूरस्थ कारखानों तक ले जाने और कारखानों से पक्के माल के रूप में उन्हें गांवों तक फिर वापस लाने के बजाय, ज्यादा अच्छा यही है कि गांव में ही कच्चे माल को पक्के माल में परिवर्तित कर दिया जाय।

अन्य शब्दों में, उत्पादन का काम वितरण और उपभोग के एकदम साथ-साथ ही होना चाहिए। इस किस्म की अर्थ-व्यवस्था कम जटिल और अधिक स्वाभाविक होगी। मुद्रा के मौजूदा सबध का आडबर भी बहुत कुछ कम हो जायगा। आधुनिक औजारों के इस्तेमाल और शक्ति के प्रयोग से ग्रामोद्योगों द्वारा तैयार वस्तुए मिलकर वस्तुओं की अपेक्षा महगी नही होगी। सच तो यह है कि कम ऊपरी लागत की वजह से ये अत में चलकर कारखाने की वस्तुओं से भी सस्ती साबित होंगी।

वैज्ञानिक युग में बड़े-बड़े कारखाने स्थापित करना निश्चय ही विवेक-पूर्ण नही है, क्योंकि वे क्षणभर में हवाई जहाज द्वारा बम गिराकर नष्टभ्रष्ट किये जा सकते हैं। अगर उत्पादन को विकेंद्रित करके औद्योगिक सहकारिता का सहारा लिया जाय, जहा स्वय मजदूर ही उत्पादन के मालिक हों, तो श्रम और पूजी का आपसी झगड़ा आसानी से हल हो सकता है।

विनोबाजी निजी क्षेत्र के विरोधी नही हैं। दरअसल, वह यह नही चाहते कि राज्य हद से ज्यादा बुनियादी उद्योगों को हस्तगत करे क्योंकि भारी उद्योगों की स्थापना से आर्थिक शक्ति का अवाछनीय केंद्रीकरण हो जाता है। आर्थिक शक्ति के केंद्रीकरण से, अत में, राजनैतिक शक्ति का भी केंद्रीकरण हो जाता है। राजनैतिक शक्ति का इस प्रकार का केंद्रीकरण निश्चय ही लोक और स्वस्थ लोकतत्र के लिए श्रेयस्कर नहीं। इसलिए विनोबाजी विकेंद्रित अर्थ-व्यवस्था के अतर्गत निजी क्षेत्र के पक्षपाती हैं। वह चाहते कि प्रत्येक ग्राम-समुदाय कम-से-कम जीवन की बुनियादी जरूरतों, जैसे भोजन, मकान, वस्त्र, शिक्षा तथा स्वास्थ्य के

मानवीय नही कहा जा सकता । फलस्वरूप वे शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक—सभी दृष्टियों से कष्ट सहन करते है । यही वजह है कि गाधीजी ने हमें उपदेश दिया था कि बिना काम के खाना अनैतिक है। हिंदू धर्मग्रंथ भी हमें यही शिक्षा देते हैं—"जो बिना काम किये खाता है, वह चोर है ।" ईसामसीह का भी उपदेश यही था कि लोग अपने पसीने की कमाई ही खायें । रोटी के श्रम की यह विचार-धारा ही गाधीवादी रचनात्मक कार्यों का आधार है ।

विनोबाजी छोटी मशीनो, जैसे चरखे में बिजली के प्रयोग के विरोधी नही है । नए किस्म के अंबर चर्खे के बारे में बातचीत करते हुए उन्होंने कहा, "जहा कही जरूरी होगा, हम उत्पादन बढाने के लिए बिजली का उपयोग कर सकते है । लेकिन, मै यह चाहूगा कि बिजली के उपयोग के कारण आर्थिक शोषण न होने पावे । अगर हम इस शर्त को मान लें कि अंबर चर्खे में तभी बिजली की शक्ति इस्तेमाल करने दी जायगी, जब कि उसके उत्पादन का सगठन सहकारिता के आधार पर होगा, तो इस शोषण को रोका जा सकता है ।"

विनोबाजी ने यह भी कहा, "मै तो अंबर चर्खे के सचालन में आणविक शक्ति के उपयोग का भी विरोधी नही हू । अगर आणविक शक्ति से भी कोई अच्छी शक्ति हो तो मै उसके उपयोग का पक्षपाती हू । मेरा कहना सिर्फ इतना ही है कि इस तरह की शक्ति का इस्तेमाल करने मे बेरोजगारी नही बढनी चाहिए और न मनुष्य द्वारा मनुष्य का शोषण होना चाहिए ।"

लोहा, इस्पात, कोयला, भारी मशीन और बडी बिजली की योजनाओं-जैसे बुनियादी उद्योगों के विरुद्ध किसीके होने का तो सवाल ही नही पैदा होता । गाधीजी भी उनके विरुद्ध नही थे । वे सिर्फ यही चाहते थे कि बुनियादी उद्योगो पर राज्य का स्वामित्व होना चाहिए और उनका प्रबंध भी सरकार द्वारा ही होना चाहिए । उनपर निजी उद्योग का अधिकार नही होना चाहिए। विनोबाजी इस बात के लिए उत्सुक है

कि हमारे अधिकांश उपभोक्ता-वस्तु-उद्योग विकेंद्रित आधार पर पड़ने-वाले अनावश्यक तनाव को भी कम करेंगे। कच्चे माल को दूरस्थ कारखानों तक ले जाने और कारखानों से पक्के माल के रूप में उन्हें गावों तक फिर वापस लाने के बजाय, ज्यादा अच्छा यही है कि गाव में ही कच्चे माल को पक्के माल में परिवर्तित कर दिया जाय।

अन्य शब्दों में, उत्पादन का काम वितरण और उपभोग के एकदम साथ-साथ ही होना चाहिए। इस विस्म की अर्थ-व्यवस्था कम जटिल और अधिक स्वाभाविक होगी। मुद्रा के मौजूदा मवध का आडम्बर भी बहुत कुछ कम हो जायगा। आधुनिक औजारों के इस्तेमाल और शक्ति के प्रयोग से ग्रामोद्योगो द्वारा तैयार वस्तुए मिलकर वस्तुओं की अपेक्षा महगी नही होगी। सच तो यह है कि कम ऊपरी लागत की वजह से ये अन्त में चलकर कारखाने की वस्तुओं से भी सस्ती साबित होंगी।

वैज्ञानिक युग में बड़े-बड़े कारखाने स्थापित करना निश्चय ही विवेक-पूर्ण नहीं है, क्योंकि वे क्षणभर में हवाई जहाज द्वारा बम गिराकर नष्टभ्रष्ट किये जा सकते हैं। अगर उत्पादन को विकेंद्रित करके औद्योगिक सहकारिता का सहारा लिया जाय, जहा स्वय मजदूर ही उत्पादन के मालिक हो, तो श्रम और पूजी का आपसी झगड़ा आसानी से हल हो सकता है।

विनोबाजी निजी क्षेत्र के विरोधी नहीं हैं। दरअसल, वह यह नहीं चाहते कि राज्य हद से ज्यादा बुनियादी उद्योगों को हस्तगत करे क्योंकि भारी उद्योगों की स्थापना से आर्थिक शक्ति का अवाछनीय केंद्रीकरण हो जाता है। आर्थिक शक्ति के केंद्रीकरण से, अंत में, राजनैतिक शक्ति का भी केंद्रीकरण हो जाता है। राजनैतिक शक्ति का इस प्रकार का केंद्रीकरण निश्चय ही लोक और स्वस्थ लोकतन्त्र के लिए श्रेयस्कर नहीं। इसलिए विनोबाजी विकेंद्रित अर्थ-व्यवस्था के अतर्गत निजी क्षेत्र के पक्षपाती हैं। वह चाहते कि प्रत्येक ग्राम-समुदाय कम-से-कम जीवन की बुनियादी जरूरतों, जैसे भोजन, मकान, वस्त्र, शिक्षा तथा स्वास्थ्य के

मामले में तो ग्रात्मनिर्भर हो ही जाय। अगर ग्राम-समुदाय को बिजली या अणुशक्ति का इस्तेमाल करना हो तो यह छोटी स्थानीय योजनाओं के जरिए होना चाहिए।

विनोबाजी यह नहीं चाहते कि गाव के लोग शक्ति के ऐसे साधन पर निर्भर करें जो हजारो मील दूर स्थित पावर स्टेशन से उनके पास भेजा जाता हो और जिसे लडाई के समय आसानी से नष्ट किया जा सकता हो, या जो सामान्य समय में भी आसानी से बिगड़ सकता हो। आर्थिक या राजनैतिक शक्ति के केंद्रीकरण से अनिवार्य रूप में हिंसा, सघर्ष और आर्थिक शोषण की स्थितिया उत्पन्न हो जाती हैं। अत अहिंसक और शक्तिमय लोकतत्र की दृष्टि से भी विकेंद्रित औद्योगीकरण आवश्यक है।

अपनी दलीलों के निष्कर्ष के रूप में उन्होने कहा, "यदि सरकार या उद्योगपति मुझे यह दिखला दें कि बडे पैमाने के औद्योगीकरण द्वारा पूर्ण रोजगार की स्थिति पैदा करना सम्भव है, तो मै विचारधारा-सबधी कोई भी ग्रन्य सवाल खडा करना नही चाहूंगा। यदि मुझे यह विश्वास होजाय कि यदि कोई भी दूसरी योजना लोगो का शोषण किये बगैर उन्हे पूर्ण रोजगार प्रदान कर सकती है, तो मै निस्सकोच अपने लकडी के चर्खे को जला दूगा और उसे खुद अपना खाना पकाने के लिए इस्तेमाल कर लूंगा।"

उन्होने आगे कहा, "मै भावनावश चर्खे से आकृष्ट नही हू। मै भारत की वर्त्तमान स्थिति में उसे अपरिहार्य समझता हू। मै समस्या के सुलझाने में अपने तरीके को गणितज्ञ की भाति प्रयुक्त करना चाहता हू। तर्क-सम्मत और वैज्ञानिक व्यक्ति की हैसियत से मै मनुष्य की वास्तविक प्रगति के लिए कुछ भी बलिदान करने के लिए प्रस्तुत हूं।

... प्रत्येक महत्वपूर्ण वैज्ञानिक झक्की होगया है। वह अपने ...। को बदलना नही चाहता और मानवता के सच्चे सुख और उन्नति पर ध्यान न देकर मशीन के आकर्षण में पडा हुआ है।

यही वजह है कि आज का वैज्ञानिक मानवता का सबसे बड़ा अभिशाप बन गया है। जबतक विज्ञान को अहिंसा से संयुक्त नहीं किया जायगा, तबतक मानवीय अस्तित्व का विनाश हुए बिना नहीं रहेगा। भारत में विज्ञान का उपयोग सहकारिता के सिद्धान्त पर संगठित छोटे पैमाने के ग्रामीण और कुटीर उद्योग के रूप में ही अहिंसक समाज के कल्याण में प्रयुक्त हो सकता है।"

: ७ :

अंत्योदय का महान् लक्ष्य

एक दिन मैंने विनोबाजी से आर्थिक आयोजन और कुटीर उद्योगों के मसले पर चर्चा की। मैंने द्वितीय पचवर्षीय योजना के प्रारूप की एक प्रति उन्हे दी। उन्होंने कहा कि मैने समाचार-पत्रो में प्रकाशित इसके संक्षिप्त रूप को पढ लिया है। फिर उन्होंने मुझसे दो सवाल पूछे। पहला, दो हजार या उससे कम की जनसख्यावाले गावो पर कितना व्यय किया जायगा? दूसरा, दूसरी योजना शहरो और गावो के सबसे गरीब तबके के लोगो की आर्थिक दशा किस तरह सुधरने जा रही है? मैंने उनसे कहा कि यह सवाल संसद और अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी की बैठको में बार-बार उठाया गया है। योजना-आयोग ने भी द्वितीय पचवर्षीय-योजना के प्रारूप में इन पहलुओ की ओर इशारा किया है। लेकिन मैंने उनसे यह वादा किया कि मै आयोजन-मत्री से इन पहलुओ पर एक टिप्पणी तैयार करने की प्रार्थना करूंगा, ताकि उन्हे उन तरीको और उपायो की साफ-साफ और ज्यादा स्पष्ट जानकारी हो जाय, जिनके जरिए अगले पाच या दस वर्षों के भीतर सबसे गरीब तबके के लोगो की आर्थिक हालत सुधारी जायगी।

विनोबाजी ने कहा, "मै इस विषय पर योजना-आयोग के लेख की प्रतीक्षा करूगा। लेकिन मैं यह जरूर महसूस करता हू कि अभी तक हमारे देश के सबसे निचले तबकेवाले और सबसे पिछड़े लोगो की अनिवार्य जरूरतों पर काफी ध्यान नही दिया गया है। शहरों में गदी बस्तियां है, जिनकी हालत अत्यत भयकर है। गाव में लाखो-करोडों गरीब भूमिहीन मजदूर और हरिजन है, जिनकी आर्थिक दशा सचमुच बडी दयनीय है। शहरो में भी हम, मिसाल के तौर पर, भगियों की आर्थिक हालत सुधारने के लिए क्या कर रहे हैं? जबतक कि दूसरी पचवर्षीय योजना मुझे

निश्चित रूप से यह न बतला दे कि वह ज्यादा गरीब तबके के लोगों के इन मसलों को किस तरह हल करेगी, तबतक मैं जनता से उसके बारे में किस प्रकार उत्साह के साथ कुछ कह सकता हूं ?"

ग्रायोजन के बारे में यही बुनियादी दृष्टिकोण है, जिसपर कि विनोबाजी बार-बार जोर देते ग्रा रहे हैं। गाधीजी ने भी हमसे बार-बार यह कहा था कि हमें निम्नतम स्तर के मनुष्य की जरूरतों पर सबसे पहले ध्यान देना चाहिए। शुरू से ही गाधीजी को रस्किन की पुस्तक 'ग्रन्टू दिस लास्ट' के इसी विचार ने ग्राकर्षित कर रखा था। दूसरे शब्दों में, ग्रायोजन के सबध में गाधीजी का दृष्टिकोण ग्रनिवार्य रूप से एक मानवीय दृष्टिकोण था। हमें दूसरों की ग्रावश्यकताग्रों पर ध्यान देने के पहले 'ग्रन्तिम मनुष्य' के दुखों ग्रौर कष्टों पर खास ध्यान देना होगा। यह ऐसा विषय है, जिसकी ग्रोर ग्रायोजन में प्राथमिकताए निश्चित करते समय हमारे ग्रर्थशास्त्रियों को गभीरतापूर्वक विचार करना चाहिए। सर्वोदयी ग्रायोजन का ग्रर्थ ग्रनिवार्य रूप से ग्रन्त्योदय-ग्रायोजन ग्रर्थात् ग्रतिम मनुष्य का कल्याण है।

विनोबाजी गाव के गरीब ग्रौर पद-दलित लोगों की ग्रसामान्य ग्रार्थिक हालतों का निरीक्षण करते हुए गाव-गाव पैदल यात्रा कर रहे हैं। वह चितातुर होकर हरिजनों की स्थिति के बारे में पूछ-ताछ करते जाते हैं, जिन्हें राजकीय कानूनों के बावजूद ग्रभी भी ग्रस्पृश्य समझा जाता है ग्रौर गाव के सामाजिक जीवन मे ग्राजादी से हिस्सा लेने की इजाजत नहीं है। भूदान-यज्ञ-सबधी ग्रपनी योजना में विनोबाजी ने यह नियम बना लिया है कि जमीन का फिर से वितरण करते समय कुल रकबे का एक-तिहाई हरिजनों को जरूर देना चाहिए। गाव में भी हरिजन-बस्तियों में झोपडों ग्रौर मिट्टी के घरों की भीड है। ग्राम तौर पर गाव के लोग ग्रछूतों को मकान बनाने के लिए गाव के भीतर जमीन खरीदने की इजाजत नहीं देते। इसलिए भूदान की वह जमीन, जो खेती योग्य नहीं है, हरिजनों को मकान बनाने के लिए दी जा रही है।

: ७ :

अंत्योदय का महान् लक्ष्य

एक दिन मैंने विनोबाजी से आर्थिक आयोजन और कुटीर उद्योगों के मसले पर चर्चा की। मैंने द्वितीय पंचवर्षीय योजना के प्रारूप की एक प्रति उन्हें दी। उन्होंने कहा कि मैंने समाचार-पत्रों में प्रकाशित इसके संक्षिप्त रूप को पढ़ लिया है। फिर उन्होंने मुझसे दो सवाल पूछे। पहला, दो हजार या उससे कम की जनसंख्यावाले गांवों पर कितना व्यय किया जायगा? दूसरा, दूसरी योजना शहरों और गांवों के सबसे गरीब तबके के लोगों की आर्थिक दशा किस तरह सुधारने जा रही है? मैंने उनसे कहा कि यह सवाल संसद और अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी की बैठकों में बार-बार उठाया गया है। योजना-आयोग ने भी द्वितीय पंचवर्षीय-योजना के प्रारूप में इन पहलुओं की ओर इशारा किया है। लेकिन मैंने उनसे यह वादा किया कि मैं आयोजन-मंत्री से इन पहलुओं पर एक टिप्पणी तैयार करने की प्रार्थना करूंगा, ताकि उन्हें उन तरीकों और उपायों की साफ-साफ और ज्यादा स्पष्ट जानकारी हो जाय, जिनके जरिए अगले पांच या दस वर्षों के भीतर सबसे गरीब तबके के लोगों की आर्थिक हालत सुधारी जायगी।

विनोबाजी ने कहा, "मैं इस विषय पर योजना-आयोग के लेख की प्रतीक्षा करूंगा। लेकिन मैं यह जरूर महसूस करता हूं कि अभी तक हमारे देश के सबसे निचले तबकेवाले और सबसे पिछड़े लोगों की अनिवार्य जरूरतों पर काफी ध्यान नहीं दिया गया है। शहरों में गंदी बस्तियां हैं, जिनकी हालत अत्यंत भयंकर है। गांव में लाखों-करोड़ों गरीब भूमिहीन मजदूर और हरिजन हैं, जिनकी आर्थिक दशा सचमुच बड़ी दयनीय है। शहरों में भी हम, मिसाल के तौर पर, भंगियों की आर्थिक हालत सुधारने के लिए क्या कर रहे हैं? जबतक कि दूसरी पंचवर्षीय योजना मुझे

निश्चित रूप से यह न कहना है कि यह ज्यादा गरीब तबके के लोगों के इन मसलों को किस तरह हल करेगी, तथापि मैं जनता से उसके बारे में किस प्रकार उत्साह के साथ कुछ कह सकता हूं ?"

आयोजन के बारे में यही बुनियादी दृष्टिकोण है, जिसपर कि विनोबाजी बार-बार जोर देते आ रहे हैं। गांधीजी ने भी हमसे बार-बार यह कहा था कि हमें निम्नतम स्तर के मनुष्य की जरूरतों पर सबसे पहले ध्यान देना चाहिए। शुरू से ही गांधीजी को रस्किन की पुस्तक 'अन्टू दिस लास्ट' के इसी विचार ने आकर्षित कर रखा था। दूसरे शब्दों में, आयोजन के संबंध में गांधीजी का दृष्टिकोण अनिवार्य रूप से एक मानवीय दृष्टिकोण था। हमें दूसरों की आवश्यकताओं पर ध्यान देने के पहले 'अंतिम मनुष्य' के दुखों और कष्टों पर खास ध्यान देना होगा। यह ऐसा विषय है, जिसकी ओर आयोजन में प्राथमिकताएं निश्चित करते समय हमारे अर्थशास्त्रियों को गंभीरतापूर्वक विचार करना चाहिए। सर्वोदयी आयोजन का अर्थ अनिवार्य रूप से अन्त्योदय आयोजन अर्थात् अंतिम मनुष्य का कल्याण है।

विनोबाजी गांव के गरीब और पद-दलित लोगों की असामान्य आर्थिक हालतों का निरीक्षण करते हुए गांव-गांव पैदल यात्रा कर रहे हैं। वह चिंतातुर होकर हरिजनों की स्थिति के बारे में पूछ-ताछ करते जाते हैं, जिन्हें राजकीय कानूनों के बावजूद अभी भी अस्पृश्य समझा जाता है और गांव के सामाजिक जीवन में आजादी से हिस्सा लेने की इजाजत नहीं है। भूदान-यज्ञ-संबंधी अपनी योजना में विनोबाजी ने यह नियम बना लिया है कि जमीन का फिर से वितरण करते समय कुल रकबे का एक-तिहाई हरिजनों को जरूर देना चाहिए। गांव में भी हरिजन-बस्तियों में झोंपड़ों और मिट्टी के घरों की भीड़ है। आम तौर पर गांव के लोग अछूतों को मकान बनाने के लिए गांव के भीतर जमीन खरीदने की इजाजत नहीं देते। इसलिए भूदान की वह जमीन, जो खेती योग्य नहीं है, हरिजनों को मकान बनाने के लिए दी जा रही है।

से निवास करें और चमकती धूप तथा ताजी हवा का आनंद लें। इतना जरूर है कि आपको अपने मौजूदा मकानों को सुधारने की कोशिश करनी चाहिए और उनमें ज्यादा हवा, रोशनी और सफाई का प्रबंध करना चाहिए। लेकिन रहन-सहन के ऊंचे स्तर की खोज में शहरों की ओर मत भागिए। बंबई और कलकत्ता-जैसे शहरों में कोई मोहल्ला जितनी ही ज्यादा घनी आबादीवाला होता है, उसमें मकान उतने ही महंगे होते हैं। अगर किसी मकान में ज्यादा खिड़कियां होंगी तो उसके लिए ज्यादा किराया देना पड़ेगा। इसलिए आप शहरों में क्यों जायंगे जहां आपको ज्यादा पैसे देने पड़ते हैं और कम खुली तथा ताजी हवा मिलती है।"

एक दिन उन्होंने गांववालों को एक बहुत ही दिलचस्प मिसाल दी। एक शहर में एक बड़े जमींदार ने, जिसने भूदान में कुछ जमीन दी थी, अपने परिवार को आशीर्वाद दिलाने के लिए विनोबाजी को निमंत्रित किया। जमींदार ने बड़े गर्व के साथ उन्हें उगते हुए सूरज का एक चित्र दिखलाया, जिसे उसने लगभग १०० रुपये में खरीदा था। विनोबाजी मुस्करा पड़े और बोले, "सौ रुपयों में उगते हुए सूरज का चित्र खरीदने की बजाय क्या यह ज्यादा अच्छा नहीं कि गांव में रहकर रोज सवेरे उगते हुए सूरज का मुफ्त दर्शन किया जाय?" और फिर उन्होंने पूछा: "रहन-सहन के उच्चतर स्तर का उपभोग कौन करता है? क्या वह तथाकथित धनी व्यक्ति, जो शहर की घनी बस्ती में रहता है और अपनी दीवारों पर प्राकृतिक दृश्य चित्रित करनेवाले अनेक चित्र टांग रखता है, या वह जो गांव के स्वस्थ वातावरण में रहता है और प्रकृति के प्रत्यक्ष संपर्क का सुख भोगता है?"

एक दूसरे दिन उन्होंने एक दूसरी दिलचस्प मिसाल दी। उन्होंने पूछा, "शहरों में व्यायामशालाओं और शारीरिक शिक्षा देनेवाले क्लबों से क्या फायदा? गांव में तो लोग स्वाभाविक रूप से फसल, फल और तरकारियां पैदा करने के लिए अपने खेतों में काम करते हैं, लेकिन इस काम को शहरवाले आमतौर पर उत्तम और सम्मानपूर्ण नहीं मानते।

तरह वे शारीरिक श्रम को विरदा समझते हैं। दूसरी ओर, शहरों
लोग कसरत करने के लिए व्यायामशालाएं और शारीरिक शिक्षा-केंद्र
जाते हैं। जब उनके बच्चों का खाना हजम नहीं होता तो उन्हें पाचन
क्षन सुधारने के लिए तरह-तरह व्यायामशाला में जाने को कहा जाता
। शिक्षा-संस्थाओं में भी बच्चों को अपनी तंदुरुस्ती सुधारने के लिए
रह-तरह की शारीरिक कसरतें सिखलाई जाती हैं। लेकिन, अगर बुनि-
यादी स्कूलों में बच्चों से कुछ तरकारी पैदा करने के लिए खेत में काम
करने को कहा जाता है, या कोई उपयोगी वस्तु तैयार करने के लिए
वर्कशाप में मेहनत करने को कहा जाता है तो उनके मा-बाप स्कूल के
अधिकारियों पर क्रोध करते हैं और उनसे कहते हैं—'हमने अपने बच्चों
को आपके स्कूल में शारीरिक मेहनत करने और तकलीफ उठाने के लिए
नहीं भेजा है'।"

इस तरह, आधुनिक समाज में सामान्य उत्पादक कार्यों को घृणा की
दृष्टि से देखा जाता है और बनावटी ढंग की शारीरिक कसरतों को फैश-
नेबिल माना जाता है। विनोबाजी ने गांव की इकट्ठी भीड़ से कहा,
"कौन रहन-सहन का ज्यादा ऊंचा स्तर है—खुली हवा में अपनी रोजी
कमाने के लिए मेहनत करने के उद्देश्य से सामान्य जीवन बिताना, या
शहरों में दूसरों की मेहनत के भरोसे रहना और फिर अपनी पाचन-शक्ति
और सुख बढ़ाने के लिए शारीरिक कसरत करना?" इसके बाद विनोबाजी
ने कहा, "किसी भी दिन मैं पहले को ही ज्यादा अच्छा समझूंगा। मैंने
देखा है कि भूदान का काम करनेवाले नौजवान गांव-गांव पैदल चलते
हुए अपना स्वास्थ्य अच्छी तरह सुधार लेते हैं और गरीब लोगों को मि
से जमीन बांटने के कार्य में मदद पहुंचाकर राष्ट्र की सेवा भी करते हैं।"

अपने बारे में वह बोले, "लोग समझते हैं कि भूदान के लिए गांव
गांव घूमने के कारण मुझे बहुत शारीरिक बोझ उठाना पड़ता है। लेकि
बात ऐसी नहीं है। मुझे पद-यात्रा में बड़ा आनंद आता है। दिन
परिश्रम के बाद रात में जब नींद आती है तो मैं लक्कड़ की भां

चिन्त सो जाता हूँ । मच्छर मेरी नींद में बाधा नहीं डालते । नींद इतनी
जेदार होती है कि शहन-शाहों को कदा नसीब होती होगी । मेरा सौभाग्य
कि हर दिन मुझे नया घर मिलता है । मैं खुले आकाश और तारों के
चे सोता हूँ । वास्तव में सारी दुनिया ही मेरा परिवार है ।'

को जन्म दिया। यहां विनोबाजी गांव-गांव और प्रान्त-प्रान्त पैदल चल-कर अपनी जिन्दगी के आदर्श को पूरा करने में लगे हुए हैं। पिछले पांच वर्षों से रोज अपनी सायंकालीन प्रार्थना के बाद की बैठक में वे भूदान के बीज बो रहे हैं। उनकी हर रोज की सभा अलग अलग किस्म की होती है। रोज लोग उनका संदेश सुनते हैं और रोज उन्हें उनके भाषण में नए उदाहरण और नई मिसालों से भरी हुई व्याख्याएं सुनने को मिलती है।

हालांकि उनकी बातचीत ज्यादातर भूदान के बारे में होती है, तथापि इस बातचीत के सिलसिले में व अक्सर सभी विषयों पर कुछ-न-कुछ कहते हैं। दरअसल, मैंने उनसे एक दिन कहा था कि भूदान पर शाम की प्रार्थना के बाद उनके जो भाषण होते हैं व उनके बुनियादी तालीम या विश्व-विद्यालयों की शिक्षा में नमूने के पाठ बन सकते हैं। उन्हें भौतिक और सामाजिक स्थितियों के साथ अपने भूदान-आंदोलन को सम्बद्ध करने में पूरी तौर पर मौलिक कामयाबी हासिल हुई है। शाम की प्रार्थना के बाद वाली अपनी एक सभा में उन्होंने कुछ लोगों को नशे में धुत पाया। उन्होंने उनमें से एक से सिर्फ यह जानने के लिए कि वह उनकी दलीलों को समझ रहा है या नहीं, कई सवाल पूछे। जब उन्होंने देखा कि वह आदमी नशे में है तो उन्होंने उसे बहुत फटकारा और कहा कि अगर लोग अपनी दौलत और ताकत को नशीली चीजों पर लुटा दें तो भूदान या कोई दूसरा सामाजिक या आर्थिक सुधार एकदम बेसूद साबित होगा। उन्होंने सभा में एक ओर बैठी हुई महिलाओं से अनुरोध किया कि वे अपने शराबी पतियों से असहयोग करें—"आप ऐसे पतियों के लिए खाना क्यों बनावें, जो अपनी बेशकीमत और महंगी आमदनी को ताड़ी और शराब में फूंक रहे हैं? आपको चाहिए कि आप उनकी पत्नियों-जैसी सेवा उसी हालत में करें, जबकि वे सही तौर पर व्यवहार करें।"

विनोबाजी को इस बात से बड़ी बेचैनी है कि गांवों के लोगों में पीने की लत पाई जाती है। उन्होंने मुझसे कहा कि अगर सरकार नशा-

बदी की नीति को जल्दी और कड़ाई के साथ लागू नही करती है तो सारा भूदान-आदोलन बेअसर हो जायगा। "दूसरी पाचसाला योजना में चालू किये जानेवाले तरह-तरह के कार्यक्रमो से क्या फायदा, जबकि लोग आज जैसे ही शराब पीने के आदी बने रहे?"

उन्हें इस बात से हार्दिक वेदना थी कि सरकार ने नशाबदी लागू करने की आखिरी तारीख निश्चित करने के बारे में नशाबदी-जाच-कमेटी की सिफारिशो को नही माना। उनकी समझ में यह बात नही आती कि भारत में एक या दो साल के भीतर नशा पीने पर पूरी रोक क्यों नहीं लगाई जा सकती। जब मैंने उनसे कहा कि भारतीय स्थल, जल और हवाई सेना के प्रतिनिधि देशव्यापी नशाबदी-नीति मानने के लिए राजी होगये हैं और वे यह नहीं चाहते कि उनके साथ कोई खास रियायत की जाय, तो इस बात को सुनकर विनोबाजी को बडी खुशी हुई। चाहे कोई दूसरा नशा छोडे या नही, देश की सशस्त्र सेनाओ को तो नशे की आदत से मुक्त होना ही चाहिए। उनका कहना है कि देश के संरक्षको का दिमाग दुरुस्त रहना ही चाहिए। वे नशे में धुत रहकर क्या कर सकते हैं?

नशाबदी लागू न होने पर दूसरी पाचसाला योजना की वजह से लोगो के हाथ आनेवाली क्रय-शक्ति का बहुत-कुछ अश पानी की तरह नशे पर बह जायगा। इसलिए विनोबाजी इस बात के लिए उत्सुक हैं कि नशाबंदी जल्द-से-जल्द देशभर में लागू कर दी जाय। लेकिन उन्हें इस बात का पूरा विश्वास है कि इस तरह का सामाजिक कार्यक्रम पुलिस की मदद से, या सिर्फ कानून के जरिए लागू नही किया जा सकता। इस प्रयोग को सचमुच कामयाब बनाने के लिए सामाजिक और रचनात्मक कार्यकर्ताओ के लिए यह जरूरी है कि वे आम जनता से सपर्क कायम करें और लोगो के खयालात बदलनेवाले प्रचार के जरिए नशाबदी को लोकप्रिय कार्यक्रम बनाने की ओर अपनी ताकत लगावें। यही वजह है कि अपनी पैदल-यात्रा के सिलसिले में उन्हें जहा-कहीं भी मौका मिलता है, वे नशाबदी लागू करने की सख्त जरूरत के बारे में लोगो को समझाते जाते हैं

विनोबाजी को इस बात पर भी दुःख हुआ है कि योजना-आयोग और भारत-सरकार ने परिवार-नियोजन के लिए बहुत-से चिकित्सा-केंद्र स्थापित करने के लिए करोड़ों रुपये की व्यवस्था की है। उनके खयाल से बनावटी ढंग पर परिवार-नियोजन का विचार ही घृणित है और अरुचिकर है। इसका मतलब यह नहीं है कि वह परिवार के आकार पर रोक-थाम रखने के खिलाफ है। लेकिन वे इस बात के लिए बहुत ही उत्सुक हैं कि परिवार पर रोकथाम लाने का यह काम संतति-निग्रह के उपायों से करने की बजाय आत्मसंयम या अपने ऊपर रोक-थाम लगाकर ही पूरा होना चाहिए। बनावटी तरीकों को अपनाने से आदमी विलासी हो जाता है और शारीरिक और नैतिक दृष्टि से उसका पतन होने लगता है। परिवार में लोगों की तादाद को सीमित करने की कोशिश करते हुए ऐसे बनावटी तरीके अपने साथ बहुत-सी नई सामाजिक बुराइयों को भी लाते हैं और समाज में भौतिक तथा नैतिक बुराइयां पैदा करते हैं।

विनोबाजी का कहना है कि राष्ट्रीय आयोजकों को लोगों से यह कहने का हक नहीं है कि अगर परिवार-नियोजन न हो तो वे बेकारी के मसले को हल नहीं कर सकते। जनता के सेवकों को अपने मालिकों से यह कहने का क्या हक है कि वे सिर्फ इतने ही लड़के और लड़कियां पैदा करें। दरअसल यह काम तो जनता का और उसके नैतिक और धार्मिक गुरुओं का है। आज की सरकार का तो फर्ज सिर्फ इतना ही है कि वह लोगों को उनकी मौजूदा हालतों में रोजगार देने की कोशिश करे।

विनोबाजी कहते हैं, "वास्तव में, जमीन का भार जनसंख्या की वजह से नहीं बढ़ता, बल्कि पाप के कारण बढ़ता है।" अगर मां-बाप परिश्रमी, ईमानदार और संयमी हों, तो उनके बाल-बच्चे भी ऐसे तरीके ढूंढ निकालेंगे, जिनसे वे अपनी रोजी कमा सकें। विनोबाजी ने कहा, "हमें याद रखना चाहिए कि अगर कुदरत ने हमें खाने के लिए एक मुंह दिया है तो उसने हमें उस मुंह को खिलाने के लिए दो-हाथ और दस अंगुलियां भी दी हैं।"

राज्य का यह कर्तव्य है कि वह अपने सभी स्वस्थ नागरिकों के लिए

रोजगार मुहैया करने की ताकत पैदा करें। विज्ञान के जरिए बहुत-से ऐसे तरीके निकाले जा सकते हैं, जिनकी मदद से बहुत बढ़ी हुई आबादी के भरण-पोषण के साधन ज्यादा सस्ते तरीके पर पैदा किये जा सकते हैं। मगर हम बनावटी तरीकों से आबादी को रोकने की कोशिश करते हैं तो उसका मतलब सिर्फ यह होगा कि हम रात-दिन के उपयोग में आनेवाली वस्तुओं को ज्यादा तादाद में पैदा करने के लिए आजकल के विज्ञान की क्षमता को स्वीकार नहीं करते। इसीलिए विनोबाजी के अनुसार, परिवार-नियोजन दरअसल एक निराशापूर्ण सलाह है। इससे जितने सवाल हल नहीं होंगे, उनसे कहीं ज्यादा नए सवाल पैदा हो जायंगे।

: ६ :

नव-निर्माण की वैज्ञानिक पद्धति

विनोबाजी तले मे अपने राष्ट्रीय-आर्थिक जीवन के निर्माण की सख्त जरूरत पर सबसे ज्यादा जोर देते है। उनका यह बहुत ही दृढ विचार है कि केंद्रीकृत ढग से ऊपरी तबको का आयोजन करना समाज और व्यक्ति, दोनो ही के लिए घातक है। गोकि भारत-जैसे बडे देश के लिए, कम-से-कम सामान्य निर्देशन की दृष्टि से, कुछ हदतक केंद्रीकरण जरूरी होगा, फिर भी वह महसूस करते है कि ग्राम-पचायतो को अपने सामाजिक और आर्थिक जीवन की व्यवस्था करने के लिए काफी राजनैतिक ताकत मिलनी चाहिए। सत्ता के ऐसे विकेंद्रीकरण के न होने पर व्यक्ति और ग्रामीण समाज सम्भवत आयोजन की बडी मशीन के मामूली पुर्जे बन जायंगे, जिसमें उन्हे स्थानीय जिम्मेदारियो को सम्हालने का मौका नही मिलेगा।

सर्वोदय के बुनियादी सिद्धातो के मुताबिक यह जरूरी है कि समाज को इस ढग पर सगठित किया जाय कि व्यक्ति और समाज, दोनो ही के हितो में उचित सामजस्य रहे और दोनो के विकास के लिए काफी क्षेत्र हो। दूसरे शब्दो में, हमें 'एकीकृत' या 'अधिनायकवादी समाज' और साथ ही 'एकीकृत व्यक्ति', दोनो ही से बचना चाहिए।

इसी दृष्टि से गाधीजी ने भारत में ग्राम-पचायतो के विकास पर जोर दिया था। विनोबाजी भी इस बात के लिए उत्सुक है कि ग्राम-पचायतो को स्वय अपनी धारणाओ और प्रेरणाओ के अनुसार अपना सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक और सास्कृतिक जीवन विकसित करने का काफी अवसर मिलना चाहिए।

वह तो यहातक कहते है कि हर गाव या गाव-समूह को अपना

आयात-निर्यात नियमित करने का काफी अधिकार होना चाहिए। यह कहना मुश्किल है कि मौजूदा हालात में ऐसा करना व्यावहारिक होगा या नही। फिर भी यह तो मानी हुई बात है कि आज भी मिलो द्वारा तैयार उपभोक्ता वस्तुए ग्रामीण बाजारो में भरकर शहरी लोग गाव-वालो को लूट रहे हैं। गावो से शहरो को सम्पत्ति के जाने का यह क्रम उसी हालत में उल्टा जा सकता है जब गांव की बनी वस्तुएं शहरो में बिकने लगें।

इसलिए पचायतो के अधिकार-क्षेत्रो में ग्रामीण उपभोक्ता समितियो को यह अधिकार होना चाहिए कि वे कम-से-कम अंतर्कालीन स्थितियों में कारखानो में बने माल को गावो में आने से रोक सकें। विनोबाजी का विचार है कि ग्राम-पचायतो को अधिकार होना चाहिए कि वे शहरी माल के गाव में आने पर कुछ-न-कुछ चुगी लगा सकें। राज्य को भी चाहिए कि वह ग्राम और कुटीर उद्योगों को हर तरह का बढावा दे, ताकि वे धीरे-धीरे अपनी अदरूनी ताकत को बढा सकें और कारखानो में तैयार माल की बराबरी कर सकें।

लेकिन ग्राम-पचायतो के बारे में पिछले कुछ महीनो के भीतर विनोबाजी ने एक बात पर चिंता जाहिर की है। अपनी भूदान-यात्रा के सिलसिले में उन्हे इसी बात का विश्वास होगया है कि ग्राम-पचायतें उसी हालत में ठीक तरह से काम कर सकती हैं, जबकि ग्रामीण समाजो की सामाजिक और आर्थिक असमानता दूर करदी जाय। उनका यह निश्चित मत है कि पूरी पचायत उन्ही गावो में स्थापित की जाय, जहा भूदान या राज्य के कानूनो के जरिए जमीन का फिर से बटवारा हो चुका है और जहा छोटे पैमाने के ग्रामीण और कुटीर उद्योग सरकारी आधार पर स्थापित हो चुके हैं। इन आर्थिक सुधारो के न होने पर, विनोबाजी के अनुसार, ग्राम-पचायतें समाज-कल्याण का साधन होने की बजाय सामाजिक और आर्थिक दमन और शोषण का साधन हो सकती हैं।

इन पचायतो के जरिए वे लोग, जो अभी तक जमीदार थे और

ने का आधारभूत राष्ट्रीय यातायात-प्रणाली पर पड़नेवाले बेहद दबाव को कम करने की दृष्टि से भी वांछनीय है। वर्तमान समय में हमारी ढुलाई शक्ति [illegible], तेल अथवा कपड़े-जैसे कच्चे माल को देश के कोने-कोने से कुछेक बड़े कारखानों के स्थानों पर भेजने में व्यय हो जाती है। बाद में तैयार माल उन कारखानों से देशभर में बिक्री के लिए बाजारों में पहुंचाया जाता है।

विज्ञान के इस युग में, जबकि बिजली की ताकत को दूर-दूर तक फैलाना संभव होगया है और उसे दूर के गांव तक भी पहुंचाया जा सकता है, यह बात विवेकपूर्ण नहीं प्रतीत होती कि हम अपने उद्योगों को कुछ थोड़े से ही केंद्रों में केंद्रित कर रखें। विज्ञान की वजह से विकेंद्रीकरण न सिर्फ मुमकिन होगया है, अपितु एकदम जरूरी भी होगया। विनोबाजी का विचार है कि आर्थिक ताकत के विकेंद्रीकरण पर अब तनिक भी रोक लगाना एकदम अवैज्ञानिक है। इसलिए आधुनिक आयोजन का एकमात्र वैज्ञानिक ढंग तले से निर्माण करना ही है।

: १० :

लोकतंत्र और चुनाव

इन दिनो विनोबाजी भारत में चुनावो की प्रणाली के बारे में गहरा चिन्तन करते रहे हैं। उनका दृढ मत है कि भारत में और दूसरी जगह भी चुनावो की जो मौजूदा प्रणाली चालू है, वह ठोस और स्वस्थ लोकतन्त्र के विकास में योग नही दे सकती। ससद और राज्यो की विधान-सभाओ के लिए प्रत्यक्ष चुनावों की प्रणाली बहुत ही खर्चीली है और भाषा-भेद को प्रोत्साहन देती है। यह प्रणाली लोगों को ऐसे प्रतिनिधि चुनने के लिए मजबूर कर देती है, जिनसे वे व्यक्तिगत तौर पर परिचित नही होते। इन खर्चीले चुनावो को चलाने के लिए विभिन्न दलों को पूंजी-पतियो से धन मागना पडता है, जिसका नतीजा यह होता है कि देश की आर्थिक नीतियो के निर्माण पर धनिक वर्ग जाहिरा तौर पर अपना असर डालने में समर्थ हो जाता है। विनोबाजी का विचार है कि इस दृष्टिकोण से चुनावों की मौजूदा प्रणाली समाजवादी ढंग के समाज की स्थापना के रास्ते में एक जबर्दस्त रुकावट साबित होती है। इसलिए विनोबाजी इस बात के लिए बहुत उत्सुक हैं कि जहातक मुमकिन हो, इस तरीके को मूलत. बदल देना चाहिए। अगर १९५७ के चुनावो के पहले इसे तब्दील कर लेना सभव न हो तो यह काम उसके तुरन्त बाद हाथ में ले लेना चाहिए, ताकि १९६२ के आम चुनाव एकदम दूसरे और ज्यादा तर्क-सगत आधार पर हो सकें। यह बिल्कुल स्पष्ट है कि चुनावों की प्रणाली में परि-वर्तन करने के लिए भारतीय सविधान में भी तब्दीली करनी पड़ेगी।

विनोबाजी का विचार है कि गाव के स्तर पर प्रत्यक्ष प्रणाली से ही चुनाव होने चाहिए, जबकि जिला, राज्य और अखिल भारतीय स्तरो पर चुनावो का तरीका परोक्ष रहे। गाधीजी की भी यही पक्की राय

थी। यह सही है कि चुनावों की प्रत्यक्ष और परोक्ष प्रणालियों के कुछ निश्चित फायदे और हानिया हैं। इसलिए यह आवश्यक है कि एक ऐसी प्रणाली निकाली जाय, जिसमें दोनों प्रणालियों की अच्छी बातें शामिल हों और दोनों की बुराइयों से बचा जा सके। विनोबाजी महसूस करते हैं कि बुनियादी स्तर पर लोकतंत्र प्रत्यक्ष ही होना चाहिए। दूसरे शब्दों में, गाव या कई गावों का एक समूह प्रौढ़ मताधिकार के आधार पर अपनी पंचायत चुन ले। साथ ही, जहातक मुमकिन हो, गाव-पचायत के स्तर पर होनेवाले ये चुनाव सर्वसम्मति से, या करीब-करीब सर्वसम्मति से ही हों। प्राचीन भारत में ग्राम-पचायतों की पवित्रता मुख्यत. उनके सर्वसम्मति से होनेवाले चुनावों और फैसलो पर ही निर्भर करती थी। 'पच-परमेश्वर' का मतलब ही यह था कि पचों की आवाज परमात्मा की आवाज थी। यह सही है कि ग्राम-पचायत की पुरानी प्रणाली को ठीक उसके पुराने रूप में ही पुनर्जीवित करना सम्भव नही, लेकिन भारत में ग्राम-पचायतों की ऐसी प्रणाली का विकसित करना बेशक मुमकिन होगा, जो कि दूसरे मुल्कों के लिए भी एक विकेंद्रित लोकतंत्रीय प्रणाली का नमूना बन सकेगी।

ग्रामस्तर से ऊपर जिले, राज्य या अखिल भारतीय स्तर के प्रतिनिधियों का चुनाव परोक्ष आधार पर हो सकता है। इस तरह की प्रणाली को अपनाने से निम्नतम स्तर पर प्रत्यक्ष और स्थानीय लोकतंत्र तथा उससे ऊपर के स्तरों पर परोक्ष और प्रतिनिधीय लोकतंत्र निश्चित रूप से स्थापित हो सकेगा। बेशक परोक्ष चुनावों की प्रणाली में कुछ मौलिक खतरे होते हैं। जब मतदाताओं की संख्या कम होगी तो उन्हें, खास तौर पर अर्ध-विकसित देशों में, धन के लोभ या जाति-पाति और साम्प्रदायिक भावनाओं से प्रभावित किया जा सकता है। लेकिन, फिर भी जब हम इन खतरों की तुलना विस्तृत चुनाव-क्षेत्रों में होनेवाले प्रत्यक्ष चुनावों की बेहद खर्चीली प्रणाली के कारण उत्पन्न मुश्किलों से करते हैं तो वे खतरे इनके सामने नगण्य प्रतीत होते हैं।

विनोबाजी की राय में दलगत प्रणाली पर आधारित ससदीय लोक-

: १० :

लोकतंत्र और चुनाव

इन दिनो विनोबाजी भारत में चुनावों की प्रणाली के बारे में गहरा चिन्तन करते रहे हैं। उनका दृढ मत है कि भारत में और दूसरी जगह भी चुनावो की जो मौजूदा प्रणाली चालू है, वह ठोस और स्वस्थ लोकतन्त्र के विकास में योग नही दे सकती। ससद और राज्यो की विधान-सभाओ के लिए प्रत्यक्ष चुनावों की प्रणाली बहुत ही खर्चीली है और भाषा-भेद को प्रोत्साहन देती है। यह प्रणाली लोगो को ऐसे प्रतिनिधि चुनने के लिए मजबूर कर देती है, जिनसे वे व्यक्तिगत तौर पर परिचित नही होते। इन खर्चीले चुनावो को चलाने के लिए विभिन्न दलो को पूंजी-पतियो से धन मागना पडता है, जिसका नतीजा यह होता है कि देश की आर्थिक नीतियो के निर्माण पर धनिक वर्ग जाहिरा तौर पर अपना असर डालने में समर्थ हो जाता है। विनोबाजी का विचार है कि इस दृष्टिकोण से चुनावों की मौजूदा प्रणाली समाजवादी ढंग के समाज की स्थापना के रास्ते में एक जबर्दस्त रुकावट साबित होती है। इसलिए विनोबाजी इस बात के लिए बहुत उत्सुक हैं कि जहातक मुमकिन हो, इस तरीके को मूलत. बदल देना चाहिए। अगर १९५७ के चुनावो के पहले इसे तब्दील कर लेना सभव न हो तो यह काम उसके तुरन्त बाद हाथ में ले लेना चाहिए, ताकि १९६२ के आम चुनाव एकदम दूसरे और ज्यादा तर्क-सगत आधार पर हो सकें। यह बिलकुल स्पष्ट है कि चुनावो की प्रणाली में परि-वर्तन करने के लिए भारतीय सविधान में भी तब्दीली करनी पड़ेगी।

विनोबाजी का विचार है कि गांव के स्तर पर प्रत्यक्ष प्रणाली से ही चुनाव होने चाहिए, जबकि जिला, राज्य और अखिल भारतीय स्तरों पर चुनावों का तरीका परोक्ष रहे। गाधीजी की भी यही पक्की राय

थीं। यह सही है कि चुनावों की प्रत्यक्ष और परोक्ष प्रणालियों के कुछ निश्चित फायदे और हानियां हैं। इसलिए यह आवश्यक है कि एक ऐसी प्रणाली निकाली जाय, जिसमें दोनों प्रणालियों की अच्छी बातें शामिल हों और दोनों की बुराइयों से बचा जा सके। विनोबाजी महसूस करते हैं कि बुनियादी स्तर पर लोकतंत्र प्रत्यक्ष ही होना चाहिए। दूसरे शब्दों में, गांव या कई गांवों का एक समूह और मताधिकार के आधार पर अपनी पंचायत चुन ले। शायद यह अधिक मुमकिन हो कि गांव पंचायत के स्तर पर होनेवाले ये चुनाव सर्वसम्मति से या करीब-करीब सर्वसम्मति से ही हों। प्राचीन भारत में ग्राम-पंचायतों की पवित्रता मुख्यतः उनके सर्वसम्मति से होनेवाले चुनावों और फैसलों पर ही निर्भर करती थी। 'पंच-परमेश्वर' का मतलब ही यह था कि पंचों की आवाज परमात्मा की आवाज थी। यह सही है कि ग्राम-पंचायत की पुरानी प्रणाली का ठीक उसके पुराने रूप में ही पुनर्जीवित करना सम्भव नहीं, लेकिन भारत में ग्राम पंचायतों की ऐसी प्रणाली का विकसित करना बेशक मुमकिन होगा जो कि दूसरे मुल्कों के लिए भी एक विकेंद्रित लोकतंत्रीय प्रणाली का नमूना बन सकेगी।

ग्रामस्तर से ऊपर जिले, राज्य या अखिल भारतीय स्तर के प्रति-निधियों का चुनाव परोक्ष आधार पर हो सकता है। इस तरह की प्रणाली को अपनाने से निम्नतम स्तर पर प्रत्यक्ष और स्थानीय लोकतंत्र तथा उस-से ऊपर के स्तरों पर परोक्ष और प्रतिनिधीय लोकतंत्र निश्चित रूप से स्थापित हो सकेगा। बेशक परोक्ष चुनावों की प्रणाली में कुछ मौलिक खतरे होते हैं। जब मतदाताओं की संख्या कम होगी तो उन्हें, खास तौर पर अर्ध-विकसित देशों में, धन के लोभ या जाति-पांति और साम्प्रदायिक भावनाओं से प्रभावित किया जा सकता है। लेकिन, फिर भी जब हम इन खतरों की तुलना विस्तृत चुनाव-क्षेत्रों में होनेवाले प्रत्यक्ष चुनावों की बेहद खर्चीली प्रणाली के कारण उत्पन्न मुश्किलों से करते हैं तो वे खतरे इनके सामने नगण्य प्रतीत होते हैं।

विनोबाजी की राय में दलगत प्रणाली पर

तन्त्र भारतीय स्थितियों के अनुकूल नही। वह एक तरह के 'मिश्रित' लोक-तन्त्र या सर्वोदय-समाज की प्रणाली को तरजीह देते हैं। उस प्रणाली को असली लोकतन्त्र नही कहा जा सकता, जिसके अन्तर्गत लोग किसी विशेष दल के टिकट पर खड़े होकर सरल बहुमत के आधार पर चुने जाते हैं। कई ऐसे मामले होते हैं, जिनमें उम्मीदवार अल्पसंख्यक मत से ही चुन लिये जाते हैं। हो सकता है कि विधान-सभा में जिस दल को मामूली-सा ही बहुमत प्राप्त हुआ हो, उसे कुल पड़े मतों के ५० प्रतिशत से भी कम मत मिले हों। इसके अलावा इस तरह का बहुमतवाला दल अपने नेता का चुनाव बहुमत द्वारा करता है। ऐसे मामलों में प्रधान मंत्री या मुख्य मंत्री, हर हालत में, आम जनता के लोकप्रिय नेता नहीं माने जा सकते। विनोबाजी पंचायत-प्रणाली के आधार पर जनता द्वारा वे रोकटोक चुनी गई लोकप्रिय सरकार को ज्यादा पसन्द करेंगे। पंचायत-प्रणाली की बुनियाद ही दलीय सरकार की प्रणाली से मूलतः भिन्न है। आर्थिक दृष्टि से अर्ध-विकसित देशों में यह जरूरी है कि सच्ची लगन के लोग, चाहे उनकी विचारधारा एक-दूसरे से कितनी ही भिन्न क्यों न हो, राष्ट्र के चौतरफा विकास के लिए आपस में मिलकर कार्य करें। इस दृष्टि से विनोबाजी इस बात के लिए बहुत उत्सुक हैं कि भारत में एक भिन्न प्रकार की राजनैतिक प्रणाली तैयार हो सकने की सम्भावना के पहले ही कांग्रेस, प्रजा समाजवादी दल और सर्वोदय-समाज के नेता विभिन्न रचनात्मक और विकास-कार्यों को कार्यान्वित करने के लिए एक दूसरे के ज्यादा नजदीक आयें।

अपनी एक प्रातःकालीन यात्रा के दौरान में विनोबाजी ने विभिन्न राजनैतिक दलों के बीच पाई जानेवाली वर्तमान कटुता को खत्म करने के लिए दो ठोस प्रस्ताव पेश किये। प्रथम, देश में यह एक परम्परा विकसित की जानी चाहिए कि आम चुनावों में विभिन्न राजनैतिक दलों के मान्य नेताओं के खिलाफ उम्मीदवार न खड़े किये जायं। उन्हें उम्मीद है कि अगर इस मामले में कांग्रेस रहनुमाई करे तो दूसरे दल तुरन्त उसका

अनुगमन करेंगे। दूसरे, इस बात की भी एक स्वस्थ परम्परा विकसित की जा सकती है कि उपचुनावों में उस दल को, जिसका सदस्य मर गया हो या जिसने इस्तीफा दे दिया हो, इस बात की इजाजत दे दी जाय कि वह दूसरे दलों से चुनाव लड़े बगैर ही अपना दूसरा उम्मीदवार खड़ा कर सके। मिसाल के तौर पर, अगर ऐसा व्यक्ति कोई कांग्रेसी हो तो कांग्रेस को अनुमति होनी चाहिए कि वह उसकी जगह दूसरा उम्मीदवार खड़ा कर ले और दूसरे दल उसके खिलाफ चुनाव न लड़ें। अगर वह व्यक्ति, जिसकी वजह से सीट खाली हुई हो, प्रजा समाजवादी दल, कम्युनिस्ट पार्टी या किसी दूसरे दल का रहा हो तो उसके मामले में कांग्रेस दल को भी यह चाहिए कि वह भी उसी नियम का पालन करे और अपने उम्मीदवार खड़े न करे। विनोबाजी का मत है कि इस परम्परा से राजनैतिक दलों द्वारा रचनात्मक कार्यों पर अपने प्रयत्न केन्द्रित करने में मदद मिलेगी और इस तरह वे हर बार उपचुनाव लड़ने में अपनी ताकत बर्बाद करने से बच जायगे।

: ११ :

नेहरू के साथ विनोबा

'भारत सेवक समाज' के वार्षिक अधिवेशन के सिलसिले में निकल
बाद की यात्रा के अवसर पर नेहरूजी ने विनोबाजी से माधोरावपल्ले
नामक गांव में भेंट करने का निश्चय किया, जो कि हैदराबाद से १०
मील की दूरी पर स्थित है। उससे पहले नेहरूजी ने मई १९५५
अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के बहरामपुर-अधिवेशन के समय विनोबा
से उड़ीसा में भेंट की थी। अतः इस मुलाकात से दोनों नेताओं को
महीने की अवधि के बाद विभिन्न मसलों पर आपस में विचारविनिम
का एक अच्छा मौका मिल गया।

नेहरूजी ने जेपचेरला तक रेल से सफर किया और फिर व
से मोटर के जरिए माधोरावपल्ले पहुंचे, जहांपर विनोबाजी ने दिन
अपना पड़ाव कर रखा था। जब नेहरूजी गांव की सीमा पर पहुंचे त
जनता की एक बहुत बड़ी भीड़ ने उनका स्वागत किया। वे लोग उ
महान् नेता की झांकी के लिए वहां जमा हुए थे। उसके तुरत बाद
विनोबाजी अपनी कुटिया से बाहर आये और नेहरूजी का स्वागत किया
फिर दोनों महापुरुषों ने भीड़ का स्वागत किया और लोगों से भीड़ ख
करके पड़ोस में ही एक दूसरी जगह जमा होने का अनुरोध किया, ज
हैदराबाद वापस लौटने के पहले नेहरूजी उनसे मिलते। इसके बाद दोनों
नेता कुटिया के बाहरी बरामदे में बैठ गये और राष्ट्रीय महत्व के विभि
मसलों पर बातचीत शुरू हुई। उनकी बातचीत का सिलसिला करीब-करी
दो घण्टे तक चला। उसके दौरान में मैं ही एक ऐसा शख्स था, जिसे व
मौजूद रहने का सौभाग्य मिला।

बातचीत शुरू करते हुए नेहरूजी ने विनोबाजी को आंध्र-तेलगा

के सम्बन्ध में भारत-सरकार के फैसले की सूचना दी। उससे एक ही दिन पहले नेहरूजी ने निजामाबाद में तत्सम्बन्धी घोषणा की थी। नेहरूजी ने विनोबाजी को उस बातचीत से भी परिचित कराया जो पंजाब के पुनर्गठन के मामले को लेकर अकालियों और सरकार के बीच चल रही थी। दोनों क्षेत्रों के लिए एक क्षेत्रीय समिति या कमेटी की धारणा हो रही थी। दोनों नेताओं ने महाराष्ट्र की परिस्थिति पर भी कुछ बातचीत की। वे उस इलाके में फैली हुई हिंसा और अशान्ति से क्षुब्ध थे। लेकिन नेहरूजी ने विनोबाजी से कहा कि उन्होंने संसद में घोषणा कर दी है कि वे इस मसले का संतोष-जनक हल निकालने के लिए तत्सम्बन्धी विभिन्न विषयों पर वार्त्ता करने के लिए तैयार हैं। नेहरूजी ने विनोबाजी को बंगाल और बिहार के विलय-सम्बन्धी ताजे प्रस्ताव के सिलसिले में हुई प्रगति से भी परिचित कराया। उन्होंने कहा कि बंगाल-बिहार और दूसरी जगहों पर विद्यार्थियों और नवयुवकों के रवैये को देखकर वे बहुत ही क्षुब्ध थे। उनकी अनुशासन-हीनता और हिंसापूर्ण व्यवहार देश के भविष्य के लिए शुभ लक्षण नहीं।

कांग्रेस-अध्यक्ष श्री ढेबरभाई इस बात के लिए बहुत ही उत्सुक थे कि जब नेहरूजी और विनोबाजी मिलें तो वे बुनियादी शिक्षा के बारे में साफ-साफ बातें करलें, ताकि एक निश्चित कार्यक्रम के अनुसार उसे राष्ट्रीय शिक्षा का भावी रूप देना सम्भव हो सके। मैं नेहरूजी को इस विषय पर विनोबाजी से हुई अपनी बातचीत-सम्बन्धी लेख दिखा चुका था। नेहरूजी ने कहा कि भारत-सरकार पहले से ही देशभर में बुनियादी शिक्षा चालू करने का फैसला कर चुकी है। लेकिन शिक्षा के क्षेत्र में बहुत से स्थिर स्वार्थवाले लोग हैं, जिनके साथ ठीक ढंग पर और जरा सावधानी से मामला तय करना पड़ेगा। नेहरूजी ने मजाक में कहा कि शायद शिक्षा-क्षेत्र के स्थिर स्वार्थी सबसे अधिक ताकतवर हैं और बहुत ही हठीले भी। विनोबाजी ने सुझाव दिया कि बहुत-से कार्यमुक्त अध्यापकों को बुनियादी स्कूलों में अवैतनिक रूप से अध्यापन-कार्य के लिए राजी

सरकार को सुझाव दे चुकी है कि आई० ए० एस० की प्रतियोगी परीक्षा को छोड़कर किसी भी दूसरी सरकारी नौकरी के लिए चुनाव करने में विश्वविद्यालय की उपाधि होना अनिवार्य नहीं माना जाना चाहिए। स्वभावत इससे बुनियादी स्कूलों से निकले विद्यार्थियों को प्रोत्साहन मिलेगा, जो न सिर्फ पठन-पाठन के विभिन्न विषयों का ज्ञान हासिल करते हैं, बल्कि जीवन के विभिन्न पहलुओं के सम्बन्ध में व्यावहारिक प्रशिक्षण भी पाते हैं।

बुनियादी शिक्षा के सभी अध्यापकों के लिए समान वेतन लागू करने के सम्बन्ध में नेहरूजी का मत है कि यह मामला निश्चय ही एक वित्तीय मामला है, क्योंकि समान वेतन का अर्थ होगा सभी अध्यापकों के लिए ज्यादा ऊंचा वेतन। फिर भी, इसमें सन्देह ही नहीं कि बुनियादी शिक्षा के अध्यापकों में आर्थिक असमानता को कम करने की हर कोशिश होनी चाहिए।

विनोबाजी बिहार में भूमि-सुधारों की प्रगति पर बड़ी उत्सुकता के साथ ध्यान देते रहे हैं। उनका खयाल है कि बिहार सरकार राज्य-विधान-सभा को बहुत ही प्रगतिशील साधनों को अपनाने के लिए राजी कर लेगी, क्योंकि बिहार ने भूदान में सबसे ज्यादा परिमाण में जमीन दी है। उन्होंने नेहरूजी से अपना विचार व्यक्त करते हुए कहा कि बिहार-सरकार क्रांतिकारी भूमि-सुधार लागू करने के लिए भूदान-आन्दोलन द्वारा उत्पन्न अनुकूल वातावरण का फायदा उठायगी। मैंने दोनों नेताओं को बताया कि नेहरूजी, कांग्रेस-अध्यक्ष तथा योजना-आयोग के अन्य सदस्यों की उपस्थिति में बिहार-भूमि-सुधार-विधेयक पर अधिक-से-अधिक हद तक समझौते का आधार हासिल करने के उद्देश्य से एक उच्च स्तरीय वार्ता की व्यवस्था कर रहे हैं। उन वार्ताओं में हिस्सा लेने के लिए भूदान-आन्दोलन के प्रमुख नेताओं को भी निमन्त्रित किया जायगा।

विनोबाजी ने नेहरूजी को बताया कि उनकी राय में चुनावों की वर्तमान प्रणाली ही सभी अव्यवस्थाओं का मूल कारण है। इस विषय

कार को सुझाव दे चुकी है कि आई० ए० एस० की प्रतियोगी परीक्षा
। छोड़कर किसी भी दूसरी सरकारी नौकरी के लिए चुनाव करने में
श्वविद्यालय की उपाधि होना अनिवार्य नहीं माना जाना चाहिए।
साथ इससे बुनियादी स्कूलों से निकले विद्यार्थियों को प्रोत्साहन
मिलेगा, जो न सिर्फ पठन-पाठन के विभिन्न विषयों का ज्ञान हासिल करते
बल्कि जीवन के विभिन्न पहलुओं के सम्बन्ध में व्यावहारिक प्रशिक्षण
पाते हैं।

बुनियादी शिक्षा के सभी अध्यापकों के लिए समान वेतन लागू करने
सम्बन्ध में नेहरूजी का मत है कि यह मामला निश्चय ही एक वित्तीय
मला है, क्योंकि समान वेतन का अर्थ होगा सभी अध्यापकों के लिए
डा ऊंचा वेतन। फिर भी, इसमें सन्देह ही नहीं कि बुनियादी शिक्षा
अध्यापकों में आर्थिक असमानता को कम करने की हर कोशिश होनी
हिए।

विनोबाजी बिहार में भूमि-सुधारों की प्रगति पर बड़ी उत्सुकता के
थ ध्यान देते रहे हैं। उनका खयाल है कि बिहार सरकार राज्य-विधान-
गा को बहुत ही प्रगतिशील साधनों को अपनाने के लिए राजी कर लेगी,
योंकि बिहार ने भूदान में सबसे ज्यादा परिमाण में जमीन दी है। उन्होंने
रूजी से अपना विचार व्यक्त करते हुए कहा कि बिहार-सरकार क्रांति-
री भूमि-सुधार लागू करने के लिए भूदान-आन्दोलन द्वारा उत्पन्न अनु-
ल वातावरण का फायदा उठायगी। मैंने दोनों नेताओं को बताया कि
राजी, कांग्रेस-अध्यक्ष तथा योजना-आयोग के अन्य सदस्यों की उपस्थिति
बिहार-भूमि-सुधार-विधेयक पर अधिक-से-अधिक अंश तक समझौते का
धार हासिल करने के उद्देश्य से एक उच्च स्तरीय वार्त्ता की व्यवस्था
र रहे हैं। उन वार्त्ताओं में हिस्सा लेने के लिए भूदान-आन्दोलन के प्रमुख
आओं को भी निमंत्रित किया जायगा।

विनोबाजी ने नेहरूजी को बताया कि उनकी राय में चुनावों की
ईमान प्रणाली ही सभी अव्यवस्थाओं का मूल कारण है। इस विषय

किया जा सकता है। इसके लिए पाठ्यपुस्तकों में विभिन्न विषयों की भी जानकारी दे सकते, अंग्रेजी आदि भाषाओं और दूसरे विषयों के बारे में भी बच्चे उस के विद्यार्थी तक पहुँचा सकते। नेहरूजी ने कहा कि वे इस बात का प्रयत्न करेंगे कि कुछ चुने हुए केन्द्रों पर उत्तर-बुनियादी शिक्षण पर रखा जाय, लेकिन वे कुछ ज्यादा इस बात में नहीं हैं कि बुनियादी स्कूलों में दूसरी जगहों की अपेक्षा ज्यादा ध्यान दिया जाय। उनका ख्याल था कि वे लोग ज्यादा उम्र हो जाने पर विचार-बुद्धि और दकियानूसी ख्याल के हो जाते हैं और इस उम्र में नवीनतम प्रयोग करने में शौक नहीं रखते। नेहरूजी ने यह भी कहा कि भारतीय संविधान के अन्तर्गत शिक्षा एक राज्यीय विषय है और यह स्वाभाविक है कि विभिन्न राज्य केन्द्रीय सरकार द्वारा हद से ज्यादा हस्तक्षेप पसन्द न करें। यह सुझाव दिया गया था कि विश्वविद्यालय-अनुदान-आयोग कुछ इस बात का दबाव डाले कि वे बुनियादी शिक्षा की उपाधियों को मान्यता प्रदान करें। नेहरूजी की राय थी कि वित्तीय सहायता के बल पर दबाव डालने की कोशिश करना अनुचित होगा। उनका दृष्टिकोण यह था कि प्रत्येक राज्य को बुनियादी शिक्षा के सम्बन्ध में प्रयोग करने की आजादी और स्वाधीनता होना ही चाहिए। जबर्दस्ती बुनियादी शिक्षा को कहीं और सरकारी प्रणाली को अभी इस अवस्था में लादना वांछनीय नहीं।

नेहरूजी विनोबाजी से इस बात पर पूर्णतया सहमत थे कि सरकारी नौकरियों में दाखिल होने के लिए विश्वविद्यालय की उपाधियों को ही एकमात्र निर्णायक गुण नहीं मानना चाहिए। बुनियादी और उत्तर-बुनियादी स्कूलों के विद्यार्थियों को और उन लोगों को जिन्होंने कोई भी उपाधि हासिल न की हो, अपनी योग्यता और क्षमता के बल पर सरकारी नौकरियों के लिए विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं में बैठने की अनुमति होनी चाहिए। नेहरूजी ने विनोबाजी को इस बात से अवगत कराया कि भारत-सरकार ने इस उद्देश्य से ही एक कमेटी नियुक्त की है और उसके सुझावों पर शीघ्र ही कुछ कदम उठाना सम्भव हो सकेगा। यह कमेटी

सरकार को सुझाव दे चुकी है कि आई० ए० एस० की प्रतियोगी परीक्षा को छोड़कर किसी भी दूसरी सरकारी नौकरी के लिए चुनाव करने में विश्वविद्यालय की उपाधि होना अनिवार्य नहीं माना जाना चाहिए। स्वभावतः इससे बुनियादी स्कूलों से निकले विद्यार्थियों को प्रोत्साहन मिलेगा, जो न सिर्फ पठन-पाठन में विभिन्न विषयों का ज्ञान हासिल करते हैं, बल्कि जीवन के विभिन्न पहलुओं के सम्बन्ध में व्यावहारिक प्रशिक्षण भी पाते हैं।

बुनियादी शिक्षा के सभी अध्यापकों के लिए समान वेतन लागू करने के सम्बन्ध में नेहरूजी का मत है कि यह मामला निश्चय ही एक वित्तीय मामला है, क्योंकि समान वेतन का अर्थ होगा सभी अध्यापकों के लिए ज्यादा ऊंचा वेतन। फिर भी, इसमें सन्देह ही नहीं कि बुनियादी शिक्षा के अध्यापकों में आर्थिक असमानता को कम करने की हर कोशिश होनी चाहिए।

विनोबाजी बिहार में भूमि-सुधारों की प्रगति पर बड़ी उत्सुकता के साथ ध्यान दे रहे हैं। उनका खयाल है कि बिहार सरकार राज्य-विधान-सभा को बहुत ही प्रगतिशील साधनों को अपनाने के लिए राजी कर लेगी, क्योंकि बिहार में भूदान में सबसे ज्यादा परिमाण में जमीन दी है। उन्होंने नेहरूजी से अपना विचार व्यक्त करते हुए कहा कि बिहार-सरकार क्रांतिकारी भूमि-सुधार लागू करने के लिए भूदान-आन्दोलन द्वारा उत्पन्न अनुकूल वातावरण का फायदा उठायगी। मैंने दोनों नेताओं को बताया कि नन्दाजी, कांग्रेस-अध्यक्ष तथा योजना-आयोग के अन्य सदस्यों की उपस्थिति में बिहार-भूमि-सुधार-विधेयक पर अधिक-से-अधिक अंश तक समझौते का आधार हासिल करने के उद्देश्य से एक उच्च स्तरीय वार्त्ता की व्यवस्था कर रहे हैं। उन वार्त्ताओं में हिस्सा लेने के लिए भूदान-आन्दोलन के प्रमुख नेताओं को भी निमंत्रित किया जायगा।

विनोबाजी ने नेहरूजी को बताया कि उनकी राय में चुनावों की वर्तमान प्रणाली ही सभी अव्यवस्थाओं का मूल कारण है। इस विषय

पर विनोबाजी का दृष्टिकोण विस्तार के साथ एक लेख के रूप में पिछले अध्याय मे दिया जा चुका है। नेहरूजी विनोबाजी से इस बात में सहमत थे कि चुनावों की वर्तमान प्रणाली को बदलना जरूरी है। चुनावो की अप्रत्यक्ष प्रणाली में भी भ्रष्टाचार का कुछ खतरा है, लेकिन इस बुराई को दूर करने के लिए बहुत-से तरीके अपनाये जा सकते हैं। नेहरूजी का विचार था कि अगर सरकार चुनावो की समूची प्रणाली को बदल देने के लिए कदम उठायगी तो हो सकता है कि देश के दूसरे राजनैतिक दलो को इस सम्बन्ध में गलतफहमी हो। इसलिए अगले आम चुनावो के तुरंत बाद इस मामले को हाथ में लिया जा सकता है।

वार्त्ता पूरी हो जाने के बाद नेहरूजी और विनोबाजी, एक साथ पडौस की उस जगह गये, जहां दोनो नेताओ के दर्शन के ही लिए लगभग पाच हजार व्यक्ति जमा थे। ज्योंही ये दोनों महापुरुष मच पर पहुचे कि जनता ने जयजयकार से उनका स्वागत किया। नेहरूजी ने उनसे कहा कि विनोबाजी ने एक महान क्रान्तिकारी आन्दोलन शुरू किया है। इस-लिए हर आदमी का फर्ज है कि वह अपनी योग्यता के मुताबिक इस आंदो-लन में मदद दे। नेहरूजी को उसी दिन शाम के समय हैदराबाद लौटना था। इसलिए उन्होने उपस्थित भीड़ के सामने कुछ मिनट तक ही भाषण किया, और फिर विनोबाजी के साथ अपनी कार की ओर लौट पड़े। विनोबाजी से विदाई लेते समय नेहरूजी ने विनोबाजी के हाथो को अपने हाथो में ले लिया और भावनापूर्ण स्वर में बोले—"अपनी तन्दुरुस्ती का जरा खयाल रखिए। हद से ज्यादा मेहनत न कीजिए।" विनोबाजी की आखें भर आईं।

नेहरूजी से हुई बातचीत पर विनोबाजी की प्रतिक्रियाएं जानने के लिए में एक घंटे और वही रुका रहा। विनोबाजी भावनाओं में डूबे हुए थे। वह कुछ क्षण चुप रहे। फिर उन्होने धीरे-से मुझसे कहा, "यह सही है कि मैं हद से ज्यादा काम कर रहा हू। दिनो-दिन मेरी शारीरिक क्ति घटती जा रही है। पहले मैं रोजाना १० से १५ मील तक पैदल

काम करता था। अब मैं प्रति-दिन ८ घंटे से ज्यादा काम नहीं कर सकता। मैं किसी तरह १२०० कैलरी तक का भोजन कर पाता हूँ और वह भी ज्यादातर तरल रूप में। लेकिन जिस समय मैं दूसरे विषयों की चर्चा करता हूँ उस समय भी मेरा दिमाग लगातार १९५७ तक भूदान के लक्ष्य को हासिल करने पर ही टिका रहता है।" और फिर उन्होंने भाव-विह्वल होकर कहा, "मेरे लिए तो यह 'करो या मरो'-जैसा मिशन हो गया है।"

पर विनोबाजी का दृष्टिकोण विस्तार के साथ एक लेख के रूप में पिछले अध्याय मे दिया जा चुका है । नेहरूजी विनोबाजी से इस बात में सहमत थे कि चुनावों की वर्तमान प्रणाली को बदलना जरूरी है । चुनावो की अप्रत्यक्ष प्रणाली में भी भ्रष्टाचार का कुछ खतरा है, लेकिन इस बुराई को दूर करने के लिए बहुत-से तरीके अपनाये जा सकते हैं । नेहरूजी का विचार था कि अगर सरकार चुनावों की समूची प्रणाली को बदल देने के लिए कदम उठायगी तो हो सकता है कि देश के दूसरे राजनैतिक दलो को इस सम्बन्ध में गलतफहमी हो । इसलिए अगले आम चुनावो के तुरत बाद इस मामले को हाथ में लिया जा सकता है ।

वार्त्ता पूरी हो जाने के बाद नेहरूजी और विनोबाजी, एक साथ पडौस की उस जगह गये, जहा दोनों नेताओं के दर्शन के ही लिए लगभग पाच हजार व्यक्ति जमा थे । ज्योही ये दोनों महापुरुष मच पर पहुचे कि जनता ने जयजयकार से उनका स्वागत किया । नेहरूजी ने उनसे कहा कि विनोबाजी ने एक महान क्रान्तिकारी आन्दोलन शुरू किया है । इसलिए हर आदमी का फर्ज है कि वह अपनी योग्यता के मुताबिक इस आदोलन में मदद दे । नेहरूजी को उसी दिन शाम के समय हैदराबाद लौटना था । इसलिए उन्होने उपस्थित भीड के सामने कुछ मिनट तक ही भाषण किया, और फिर विनोबाजी के साथ अपनी कार की ओर लौट पड़े । विनोबाजी से विदाई लेते समय नेहरूजी ने विनोबाजी के हाथों को अपने हाथो में ले लिया और भावनापूर्ण स्वर में बोले—"अपनी तन्दुरुस्ती का जरा खयाल रखिए । हद से ज्यादा मेहनत न कीजिए ।" विनोबाजी की आखें भर आईं ।

नेहरूजी से हुई बातचीत पर विनोबाजी की प्रतिक्रियाए जानने के लिए मैं एक घंटे और वही रुका रहा । विनोबाजी भावनाओं में डूबे हुए थे । वह कुछ क्षण चुप रहे । फिर उन्होने धीरे-से मुझसे कहा, "यह सही है कि मैं हद से ज्यादा काम कर रहा हूं । दिनों-दिन मेरी शारीरिक शक्ति घटती जा रही है । पहले मैं रोजाना १० से १५ मील तक पैदल

काम करता था। अब मैं प्रति-दिन ८ मील से ज्यादा सफर नहीं कर सकता। मैं किसी तरह १,२०० अंग्रेजी शब्द का बोलना कर पाता हूँ और वह भी लगभग चार हफ्ते में। लेकिन जिस समय मैं दूसरे विषयों की चर्चा करता हूँ उस समय भी मेरा दिमाग लगातार १९५७ तक भूदान के लक्ष्य की प्राप्ति करने पर ही टिका रहता है।" और फिर उन्होंने भाव-विह्वल होकर कहा, "मेरे लिए तो यह 'करो या मरो'-जैसा मिशन हो गया है।"